निर्मला योग

द्विमासिक वर्ष ४ अंक २२ नवम्बर-दिसम्बर १९८५

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनो,
मोक्ष प्रदायिनो, माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

निर्मला विद्या

निर्मला विद्या एक विशिष्ट शक्ति है जिसके द्वारा सम्पूर्ण दैवी कार्य सम्पन्न होता है। यहां तक कि क्षमायापन भी इसी के द्वारा सम्पन्न होता है। जब आप कहते हैं (प्रार्थना करते हैं) "मां हमें क्षमा प्रदान करें।" वह तकनीक जिसके द्वारा मैं क्षमा करती हूँ वह भी निर्मला विद्या की परिधि में आता है। वह तकनीक जिसके द्वारा मैं तुम सबसे प्रेम करती हूँ, निर्मला विद्या है। वह तकनीक जिसके द्वारा मंत्र स्वयं प्रत्यक्ष रूप में उद्भाषित होकर स्पष्टीकरण करते हैं और प्रभावशाली (effective) होते हैं, वह निर्मला विद्या ही है। 'निर्मल' शब्द की व्युत्पत्ति एवं व्याख्या सन्धि विच्छेद द्वारा होती है। यथा निः+मल=निर्मल अर्थात् जिसमें किसी प्रकार का भी मैल (मल) न हो, यानि कि विशुद्ध। 'विद्या' का अर्थ है ज्ञान। अतः 'निर्मल विद्या' विशुद्धतम ज्ञान है। दूसरे शब्दों में इसको तकनीकी ज्ञान (युक्ति संगत ज्ञान) की संज्ञा भी दी जाती है। यह लगाव अथवा मोह उत्पन्न करता है। शक्ति राग की जन्मदात्री भी है जिसमें भिन्न-२ प्रकार की आकृतियों का प्रादुर्भाव होता है। फलस्वरूप यह सक्रिय होकर अशुद्ध अनैच्छिक वस्तुओं की ओर आकर्षित होती है और अपनी शक्ति से ओत प्रोत कर देती है। यह एक युक्ति (technique) है, जो बहुत पवित्र है जिसकी विस्तृत व्याख्या मैं आपके समक्ष न कर पा सकूंगी। क्योंकि आपका संयंत्र सक्रिय नहीं है। अथवा आपके पास यह (विशेष यंत्र) संयंत्र है ही नहीं।

परन्तु आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि यह कितना रहस्यमय है। निर्मला विद्या के उच्चारण मात्र से ही आप उस महान शक्ति का आह्वान कर आमंत्रित कीजिये। वह सम्पूर्ण वस्तु अभिजात्य युक्ति (तकनीक) आपके समक्ष उपस्थित होकर अनुचर समान आज्ञापालन को तत्पर होगी। आपको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। यह घटना विश्व भर में कहीं भी, किसी भी गवर्नमेंट में घटित नहीं होती है। आप केवल उस गवर्नमेन्ट को सम्बोधित करें और सम्पूर्ण वस्तु सक्रिय (गतिमान) हो उठती है। विश्व भर में पूर्णरूप से समस्त सृष्टि में इस तकनीक (युक्ति) को निर्मल विद्या के नाम से जाना जाता है (विख्यात है)। इस तकनीक में कुशलता प्राप्त करने हेतु तल्लीनता से समर्पण करना होता है। जहां कुशलता (mastery) प्राप्त हुई यह तल्लीनता से आज्ञा पालन करने को उद्यत रहती है। यह श्री गणेश शक्ति है, यह सरलता, सहजता एवं निर्मलतायुक्त शक्ति है। यही सौजन्यता है। यह सौजन्यमयी सरलता ही सर्वशक्ति सम्पन्न है। जब सरलता बागडोर सम्भाल लेती है और स्वयं सब प्रबन्ध करती है तो इस प्रकार से सक्रिय होकर गतिमान होती है।

यह निरन्तर उच्चावस्था में प्रगति करती है तब इसे पराशक्ति कहा जाता है। शक्ति से भी परे यह मध्यमा का रूप धारण कर लेती है। वामांग में यह विशुद्धि तक आती है। वहां आप स्वयं अपराधी बन जाते हैं। इसका कारण है आपकी अपराधी प्रकृति की भावना। और आप कटु वचन कह कर दुर्व्यवहार करते हैं। वामांग की विशुद्धि श्री गणेश शक्ति की बाधा (व्याधि, पकड़) है। श्रीगणेश सर्वाधिक मृदुल हैं। जब आप श्री गणेशजी के दर्शन लाभ करते हैं और विचार करते हैं तो आपको कौतुक दृष्टिगोचर होगा—यह सरल प्रशस्त स्रोत

(शेष तृतीय कवर पर)

सम्पादकीय

बिन पावन की राह है, बिन बस्ती का देस ।
बिना पिंड का पुरुष है, कहैं कबीर संदेस ॥

—श्री कबीर दास जी

सन्त कवि श्री कबीर दास जी निर्विकल्प स्थिति का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि वास्तविकता निराकार में ही है। यह देश बिना बस्ती का है, मनुष्य बिना पिण्ड (शरीर) का है और मार्ग बिना साधन का है।

वास्तव में हम सहजयोगियों को निराकार का ही चिन्तन साकार के माध्यम से करना चाहिए। यही साध्य है और यही अभीष्ट भी।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : लोरी एवं कैरी हायनेक
1540, टेलर वे
वैस्ट वैन्कूवर, B.C. VIS 1N4

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पेंट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम. बी. रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन,
बोरीवली (पश्चिमी),
बम्बई-४०००९२

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्लू. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में ..... पृष्ठ

१. सम्पादकीय ... १
२. प्रतिनिधि ... २
३. परमपूज्य श्री माताजी का प्रवचन ... ३
४. सहस्रार चक्र (परमपूज्य माताजी के अंग्रेजी भाषण का अनुवाद) ... १५
५. महामानव (The Superman) ... २७
६. निर्मल विद्या ... द्वितीय कवर

परमपूज्य श्री माताजी का प्रवचन

नई दिल्ली
१७ फरवरी, १९८१

आदर से और स्नेह के साथ जो आपने मेरा स्वागत किया है यह सब देख करके मेरा हृदय अत्यन्त प्रेम से भर आया। यह भक्ति और परमेश्वर को पाने की महान इच्छा कहां देखने को मिलती है ? आजकल के इस कलियुग में इस तरह के लोगों को देख करके हमारे जैसे एक मां का हृदय कितना आनन्दित हो सकता है आप जान नहीं सकते। आजकल घोर कलियुग है, घोर कलियुग। इससे बड़ा कलियुग कभी भी नहीं आया और न आएगा। कलियुग की विशेषता है कि हर चीज के मामले में भ्रान्ति ही भ्रान्ति है इन्सान को। हर चीज भ्रान्तिमय है। इन्सान इतना बुरा नहीं है जितनी कि यह भ्रान्ति बुरी है। हर चीज में, अंग्रेजी में जिसे curious (अजीब) कहते हैं, हर चीज में जिसे समझ में नहीं आता कि यह बात सही है कि वो बात सही है, कोई कहता है यह करो और कोई कहता है वो करो, कोई कहता है इस रास्ते जाओ भाई, तो कोई कहता है उस रास्ते जाओ। तो कौन से रास्ते जाएं ? हर मामले में भ्रान्ति है।

पर सबसे ज्यादा धर्म के मामले में भ्रान्ति है। पर जो सनातन है, जो अनादि है, वो कभी भी नष्ट नहीं हो सकता, कभी भी नष्ट नहीं हो सकता, क्योंकि वो अनन्त है। वो नष्ट नहीं हो सकता। उसका स्वरूप कोई कुछ बना ले, कोई कुछ बना ले, कोई कुछ ढकोसला बना ले, और कोई कुछ ढकोसला बना ले, कोई उसको पैसे में बेचे, कोई उसको कोई और तरीके से बेचे. कुछ उसका रूप बना लीजिए, लेकिन जो तत्व है वह सनातन है और वो जो तत्व है उसका नाम है ब्रह्मतत्व। इसी ब्रह्मतत्व से सारी सृष्टि की रचना हुई। इस ब्रह्मतत्व को पाना ही जीवन का लक्ष्य है। और दुनिया भर के काम आप करते रहे हैं और करते रहेंगे, अनेक जन्मों में भी किए हैं और अनेक जन्मों में करते रहे हैं और करते रहेंगे। अनेक जन्मों में आपने भक्ति की है और मांगा है कि हमें यह ब्रह्म तत्व प्राप्त हो. यह आज की भक्ति का फल नहीं है और आश्चर्य की बात तो यह है कि इसी घोर कलियुग में ही यह मिलने वाला है।

लेकिन पुराण आप पढ़ें तो उसमें बहुत साफ तरीके से लिखा है कि इसी घोर कलियुग में ही जब इन्सान दलदल में फंस जायेगा तभी यह चीज मिलने की है। इसका मतलब कभी भी यह नहीं कि जो पहले हो चुके हैं, जो द्रष्टा थे, जो साधुसन्त हो गए हैं, जो गुरु हो गए हैं, जो सतगुरु हो गए हैं और जो कुछ भी हमारे वेद और पुराणों में लिखा है वह झूठ है। एक शब्द भी झूठ नहीं है। और झगड़ा लेकर वो लोग बैठते हैं और बातें करते हैं कि वेद में यह लिखा है और पुराण में यह लिखा है, तो दोनों का मेल कैसे बैठे। यह झगड़े बहुत होते हैं और कोई सनातन बनता है और कोई कुछ बनता है और मुझे हंसी आती है। इसी के बारे में थोड़ी सी आज चर्चा करूंगी क्योंकि यह बड़ा झगड़ा

हमारे देश में चल रहा है।

हमारे अन्दर तीन तरह की शक्तियां विराजती हैं। पहली जो शक्ति है मुख्यत: जो शक्ति है वो है इच्छाशक्ति। अगर परमात्मा को इच्छा ही नहीं होती तो संसार क्यों बनाते। उनकी इच्छाशक्ति के अन्दर से ही बाकी की शक्तियां निकली हैं। इसी शक्ति को हमारे सहजयोग भाषा में महाकाली की शक्ति कहते हैं। इसी शक्ति की वजह से आज आप भी भक्ति में रस ले रहे हैं। क्योंकि अन्दर इच्छा ही होती है कि भक्ति में चलें, भक्ति का मजा आ रहा है, भक्ति में रहें, परमात्मा को याद करें, उनको बुलाएं। यह मानव ही करता है। जानवर तो नहीं करता, जानवर तो भक्ति नहीं करता। मानव ही करता है।

उसके साथ हमारे अन्दर एक दूसरी शक्ति है वो है इच्छा शक्ति को क्रिया में लाने वाली, क्रियान्वित करने वाली शक्ति, क्रियाशक्ति। उसे सहजयोग भाषा में मां सरस्वती की शक्ति कहते हैं। मैं कोई हिन्दू धर्म सिखा रही हूँ या मुसलमान धर्म सिखा रही हूँ या सिख धर्म सिखा रही हूँ, वो मेरे समझ में नहीं आई। जो बात मैं सिखा रही हूँ वो तत्व की सिखा रही हूँ, वो सब धर्म में एक है। इसलिए कोई भी यह न सोचे कि मैं उन्हीं मां काली और मां सरस्वती की बात कर रही हूँ जिसे कि हिन्दू धर्म में लोग मानते हैं। यदि अच्छा नहीं लगता तो उसको आप क्रियाशक्ति कह लीजिए। लेकिन वो महासरस्वती की शक्ति है।

और जो तीसरी शक्ति है वो हमारे अन्दर विराजती है। परमात्मा ने हमारे अन्दर दी हुई है। इसी शक्ति से हम धर्म को धारण करते हैं। धर्म का मतलब यह नहीं कि हम इस धर्म के हैं या उस धर्म के हैं, लेकिन अन्दरूनी धर्म जो हम धारण करते हैं। यानि अब हम जानवर नहीं, ये तो बात सही है। पहले अमीबा थे। अमीबा से होते होते आज हम मनुष्य बन गए। और यह जो हम मनुष्य बने हैं, इसके दस धर्म हैं। और वह दस धर्म हमारे अन्दर बसते हैं। इसको हम जोड़ के नहीं रखते। संजोया नहीं तो हम धर्मच्युत हो जाते हैं, गिर जाते हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि आप कोई पठन करें या कुछ करें या lecture (भाषण) सुनें। इसका मतलब है धर्म में आप स्थित रहें। जैसे कि सोने का धर्म है कि उसका रंग खराब नहीं होता। जैसे कि एक कार्बन का है कि उसके अन्दर चार वेलेंसी होती हैं। उसी प्रकार मानव का धर्म है। उसके अन्दर दस धर्म हैं। मानव के अन्दर धर्म के प्रति जाग्रति भी है। यह दस धर्म कोई नाम देने लायक चीज नहीं हैं। अब यह दस धर्म को जब हमने बिठा लिया, इस धर्म से ही हमारा evolution (उत्क्रान्ति) हुआ, उत्क्रान्ति हुई है, हम अमीबा बने। धर्म हमारे अन्दर बदलते गए। जब इन्सान के धर्म में हम आ गए तो हम इन्सान कहलाने लगे। जैसे कि जानवर को आप किसी गंदी जगह पर बिठा दीजिए उसको गंदगी नहीं आती। लेकिन इन्सान को गंदगी का मालूम है। वो इन्सान जो है उसका धर्म जानवर से ऊंचा है।

अब जो दशा आने वाली है वह धर्म से परे है। अब आपको कोई धर्म का पालन नहीं करना पड़ेगा। आप हो ही जाएंगे धर्म में, धर्मातीत जिसे कहते हैं। और इसी तरह से यह तीन गुण हमारे अन्दर हैं। जैसे कि इच्छाशक्ति से हमारे अन्दर गुण आता है वो तमोगुण, और जो क्रियाशक्ति से आता है वो रजोगुण, और हमारे धर्म की शक्ति से हमारे अन्दर जो गुण उत्पन्न होता है वो है सत्वगुण। इस प्रकार हमारे अन्दर तीन गुण हैं और इन्हीं तीनों गुणों के हेर-फेर से जिसे अंग्रेजी में permutations and combinations से ही अनेक जातियां तैयार हुई हैं। यह क्या है? आप अपने को हिन्दू कहें, ईसाई कहें, मुसलमान कहें,

कोई फर्क नहीं पड़ता। सब एक चीज है। अब देखिए इन्सान में भी कितनी चीजें एक जैसी हैं। सब हंसते एक जैसे हैं, रोते एक जैसे हैं। सिर्फ भाषा का फर्क है। इस वजह से हम समझ नहीं पाते कि सारी सृष्टि चराचर में जो एक ही ब्रह्म तत्त्व बहता है, वो ही ब्रह्मतत्व जो, उसकी ही भाषा अनेक हो जाती हैं, माने प्याले अलग हों लेकिन उसके अन्दर जो अमृत है वो सब जगह एक ही है। अब झगड़ा लोग यह करते हैं कि प्याले ठीक हैं कि अमृत ठीक है, झगड़ा यह है। असल में दोनों ही ठीक हैं। कुछ कुछ ऐसे भी प्याले भगवान बना देते हैं कि उसमें पूरा का पूरा अमृत आकर बैठ जाता है। आखिर अमृत भी तो प्याले में ही आएगा। अगर प्याला नहीं होगा तो अमृत कैसे आएगा। यही झगड़े की बात है कि लोग प्याला और अमृत को अलग समझते हैं। यानि यही ब्रह्म तत्व को जानने के लिए ही वेद लिखे गए। वेद तब लिखे गए। 'वेद' 'विद' से होता है। 'विद' शब्द का मतलब है जानना। और अगर सारे वेद पढ़ करके भी आपने अपने को नहीं जाना तो वेद व्यर्थ हैं। वेद का अर्थ ही खत्म हो गया अगर आपने अपने को नहीं जाना। आप गए और वहां आपके बहुत भाषण हुए, लैक्चर हुए, और आपने अपने को नहीं जाना। आप सिद्ध ही कैसे करेंगे कि परमात्मा है? कोई सिद्धान्त है आपके पास? आपके बच्चे आजकल यहां मन्दिर में नहीं आएंगे। कहेंगे कि क्या भगवान हैं, कोई सिद्धता नहीं। इसलिए जब अपने को जान लेते हैं तो आपके अन्दर से ही ब्रह्म बहना शुरू हो जाता है। मैं यहां आपको वही चीज देने आई हूं। जिसको आप हजारों वर्षों से खोज रहे थे। यह आपकी अपनी ही है। आपकी अपनी ही है, सिर्फ मुझे उसकी कुंजी मालूम है। मैं कुछ अपना नहीं दे रही हूं। आपका जो है आपको ही सौंपने आई हूं। आप अपने को जान लीजिए और इस ब्रह्म तत्व को पा लीजिए। यही आत्म-साक्षात्कार है, क्योंकि आत्मा का प्रकाश ही ब्रह्म तत्व है। यही परमात्मा का साक्षात्कार है, क्योंकि आत्मा को जाने बगैर आप परमात्मा को नहीं जान सकते। बगैर आंख के आप देख नहीं सकते। उसी तरह जब तक आपने आत्मा को जाना नहीं परमात्मा को जान नहीं सकते। लेकिन मैं अगर कहूं कि आप आत्मा को जानिए, आत्मा को जानिए, तो आप भी रटें, आप आत्मा को जानिए, आत्मा को जानिए। रटने से नहीं जान सकते। उसको पाना होगा। यह घटना घटित होनी होगी।

अपने देश में तीन तरह की व्यवस्था इन तीन चीजों से होती है। पहली तो व्यवस्था यह हुई कि हम इस ब्रह्म तत्व को जानें, उसके लिए कुछ क्रिया करें, होम करें, हवन करें। निराकार ही को सोच रहे थे इस वक्त। उन्होंने साकार की बात तब नहीं करी। उस वक्त उन्होंने निराकार की बात ही करी कि हम निराकार को जानें। होम करें, हवन करें, ये करें, वो करें, मन्त्र कहें। किसी तरह से जागृति हो जाए। इसके फलस्वरूप संसार में अवतरण हुए। जब आपने अमृत को माना जो कि निराकार है तो वो साकार होकर संसार में आया। उसको आना ही पड़ेगा। अगर साकार नहीं आएगा तो आप कैसे जानिएगा। जैसे कि एक दीप की लौ देख रहे हैं। दिखने को तो आकार है लेकिन सब तरफ फैली हुई है। उसी प्रकार निराकार साकार नहीं होगा तो आप निराकार को जान ही नहीं सकेंगे। इसीलिए संसार में अनेक अवतरण हुए।

उसमें से श्री विष्णु जी के अवतरण हुए हैं। उसकी वजह है कि श्री विष्णु जी ही हमारे अन्दर धर्म की संस्थापना करते हैं और हमारा उत्क्रान्ति का मार्ग बनाते हैं। इसलिए श्री विष्णु जी की स्थापना हुई। इसका मतलब कभी भी नहीं कि शिवजी का कोई महत्व नहीं। बहुत से लोग कहते हैं कि भई, हम विष्णु जी को मानते हैं और शिवजी को नहीं मानते। यह तो भई ऐसा ही हुआ

कि हम अपनी नाक को मानते हैं और आंख को नहीं मानते, जब कि वे एक ही शरीर के अंग प्रत्यंग हैं। समझ लीजिए विराट श्री विष्णु जी का सबसे बड़ा स्वरूप है। उसके अन्दर अगर उनका हृदय है तो उसमें शिवजी बसे हैं। और ब्रह्म देव जी हैं वो उनकी क्रिया शक्ति को सम्भाले हुए हैं। उन्होंने क्रिया करके सारी सृष्टि रची, सुन्दरता से सब कुछ बनाया। पांच महाभूतों, पंच महाभूतों को ले करके उन्होंने सारी सृष्टि रची और जब लोगों ने इन पंच महाभूतों को ही, उसी को, सोचा कि उनकी सेवा करने से या उनको जागरूक करने से ही परमात्मा को जानें, तो वो साक्षात्कार परमात्मा के जो विष्णु स्वरूप जी अंग हैं, कहना चाहिए कि विष्णु स्वरूप जो उनके अवतरण हैं, वह हुए।

संसार में आप जानते हैं कि दशावतार हुए। अब हुए हैं कि नहीं हुए, इसकी सिद्धता देने के लिए हम आए हैं इस संसार में। क्योंकि किसी ने बता दिया इसलिए आपने विश्वास कर लिया। लेकिन यह दस अवतरण हुए हैं और इन्हीं अवतरणों के सहारे ही हमारी उत्क्रान्ति हुई है। याने पहले-पहले सब लोग मछलियों में ही थे। समुद्र में ही जीव धारणा हुई है। सब लोग कहते हैं। और उसके बाद कुछ मछलियाँ बाहर की ओर चली आईं। उन मछलियों को पहली बार लाने वाला मत्स्य अवतार हुआ। वो श्री विष्णु का स्वरूप था। उसके बाद आप जानते हैं कि वो दस रूप में आते रहे। यह अगवाई करने का जो कार्य है वो परमात्मा को ही करना पड़ा। यह परमात्मा का कार्य है। उसे मनुष्य नहीं कर सकता। या एक मछली नहीं कर सकती। इस लिए पहले जो अगवाई करने का काम था उसके लिए साक्षात् परमात्मा संसार में अवतरित हुए। इसमें कोई शक नहीं।

लेकिन जब लोगों ने दूसरी चीज शुरू कर दी, भक्ति। कि परमात्मा तो संसार में अवतार ले रहे हैं तो इसको समझ के उन्होंने भक्ति शुरू कर दी। तो उसी में लिपट गए वो। माने यह है कि फूल के अन्दर शहद है समझ लीजिए। तो आपको फूल का शहद लेना चाहिए, यह तो बात सही है। लेकिन शहद फूल के बगैर तो नहीं होता। लोगों ने कहा कि भई फिर फूल की बात करो। एक शहद की बात करने लग गए, एक फूल की बात करने लग गए। उसके बाद उन्होंने कहा कि फूल की बात करो। तो फूल ही में अटक गए वह लोग। अपने मन से मूर्तियां बनानी शुरू कर दीं। उसकी प्राण प्रतिष्ठा नहीं करी। उसमें जागृति नहीं दी। उसको कायदे से नहीं बिठाया। और शुरू हो गया। तो अटक गए। तब लोगों ने शुरू किया, बन्द करो भई, अब निराकार की बात करो। वो कभी निराकार से साकार में जाएं, साकार से निराकार में जाए। यह झगड़ा चल गया। और झगड़ा कोई है ही नहीं। एक के बगैर दूसरा नहीं है और दूसरे के बगैर पहला नहीं है। ऐसी सीधी बात है। क्योंकि दोनों ही बातें बन गईं। एक ने फूल की बात करी और एक ने शहद की करी, और दोनों ही बातें ही रह गईं। बातें रह गईं, बातें ही रह गईं और आज तक बातें ही रह गई हैं। तो दोनों ही बात सही हैं। वो भी सही है, यह भी सही है। उसका खंडन इसलिए हुआ, उन्होंने खंडन इसलिए किया कि जब जनसाधारण में देखा कि एक तरफ खूब बहते चले जा रहे हैं तो उनको खींच कर दूसरी तरफ ले आए कि बाबा यहां ठिकाने से बैठो। जब देखा कि इस तरफ बहुत बहते जा रहे हैं तो फिर उनको उस तरफ ले आए।

जो ला रहे हैं वो एक ही इन्सान हैं। उनका नाम है आदिगुरु दत्तात्रेय जी, आदिनाथ हैं, आदि गुरु हैं। वो ही अनेक बार संसार में आए और उन्होंने कहा कि भई, हां, ठीक है, अवतरण हुए हैं, मानिए इसे। लोग अवतरण को चिपक गए। 'राम, राम, राम'। रास्ते में जा रहे तो 'राम, राम', बाजार में जाओ तो 'राम, राम', इधर देखो तो

'राम-राम'। कोई किसी की अकल नहीं रह गई कि इस तरह से राम का नाम नहीं लेना चाहिए। हर समय राम को आप इतना सस्ता किए दे रहे हैं। उसका भी एक तरीका है। तब फिर उन्होंने कहा कि चलिए यह भी बात बन्द करिए। वो ही उनके यहां अनेक अवतरण हुए हैं। उन्होंने अपना ही इसलिए खंडन किया।

वही संसार में राजा जनक के रूप में आए थे। और राजा जनक ने एक नचिकेता को ही आत्म-साक्षात्कार दिया था। राजा जनक के बारे में आप जानते हैं कि उनको लोग 'विदेही' कहते हैं। और उनसे लोगों ने पूछा कि भई आपको विदेही कैसे कहते हैं। नारद ने कहा कि तुमको विदेही कैसे कहते हैं ? तुम तो संसार में रहते हो, तुम विदेही हो ? "कहा बहुत आसान है। भई ऐसा करो शाम को बात करना। अभी तो तुम एक काम करो। एक कटोरे में दूध है। उसे लेकर चलो। और शाम को मुझे बताना।" अब वो दूध का कटोरा ऐसा था कि उसमें दूध छलक जाएगा। परन्तु उन्होंने कहा था कि एक बूंद भी नहीं छलकना चाहिए, इसी को देखते रहना और छलकना नहीं चाहिए एक भी बूंद। तब मैं बताऊंगा कि मुझे विदेही क्यों कहते हैं। शाम तक बिचारे वो अपने लिए लिए घूम रहे हैं। वो उसके साथ सारी दुनिया में गए और परेशान हो गए। जब शाम को लौटे तो उन्होंने कहा "अब तो बताइए मैं तो तंग आ गया सारा दिन इस तरह आपके साथ घूमता रहा।" कहने लगे "पहले तो यह बताओ कि तुमने क्या देखा ?" उन्होंने कहा, "क्या देखा ! मैं क्या देखता ? मैं तो पूरे समय दूध ही देखता रहा कि गिर न जाए।" कहने लगे, "मैं procession (शोभा यात्रा, जलूस) में गया। फिर मेरा बड़ा भारी दरबार था और वहाँ नृत्य हुआ, कुछ नहीं देखा तुमने ?" कहने लगे, "कुछ नहीं देखा।" राजा जनक ने कहा कि, "बेटे मेरा यही हाल है। मैं कुछ देखता नहीं हूँ। मैं सारे समय अपने चित्त को देखता रहता हूँ कि कहीं छलक न जाए मेरा सारा चित्त।" यह अवतरण है। राजा जनक भी एक अवतरण हैं। बहुत बड़े अवतरण हैं। वो इस संसार में गुरू के रूप में आए।

इन्हें जिसको कि आज हम लोग सिरफुटौवल करते हैं, मुहम्मद साहब भी वही हैं। कोई अन्तर नहीं। और उनकी जो लड़की थी वो साक्षात् जानकी ही थी। इसकी आपको हम सिद्धता दे देंगे। बेकार में हम। हां अगर मुसलमान खराब है तो वो दूसरी बात है। लेकिन मुहम्मद साहब नहीं थे। उन्होंने भी वही बात करी।

और फिर जब मुहम्मद साहब ने देखा कि मुसलमान इतने गधे हो गए तब वो संसार में आए और आपको मालूम है कि गुरु नानक के नाम से संसार में उन्होंने कार्य किया।

वो सभी निराकार ही की बात कर रहे थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि इन्सान चिपक जाएगा। किसी चीज में और उन्होंने हमारे धर्म को हमेशा संभाला और आखिरी बार वो आए थे शिरड़ी के साईं नाथ बन कर। ऐसे इनके अनेक अवतरण हुए हैं। और यह कोई इन्सान नहीं थे। यह परमात्मा का सबसे अबोधिता का तत्व था, जिसे innocence कहना चाहिए, उसके अवतरण थे। और उनका जीवन भी उसी तरह से अत्यन्त निष्पाप और निर्मल था। और वो साक्षात् शक्ति उनके साथ या तो बहन जैसी जनक की लड़की सीताजी थीं, मुहम्मद साहब की लड़की फातिमाजी थी और आपको मालूम है कि गुरु नानक जी की बहन नानकी यह जानकीजी थीं, जो साक्षात् थीं। इसमें कोई शंका की बात नहीं है मेरे लिए। लेकिन आपके लिए हो सकती है।

लेकिन इसको मैं सिद्ध कर सकती हूँ। क्योंकि जब तक आपके आंख नहीं आती आप

इसको नहीं मान सकते, ठीक है। लेकिन आपको आंख देने पर तो मानना ही पड़ेगा कि सफेद सफेद है, झूठ झूठ है। तो किस बात का झगड़ा है फिर। यह तो अंधेरे में ही लोग आपस में एक-दूसरे को मार रहे हैं। एक बार आँख खुलने पर, मैं बताती हूँ आपसे, आप यह सारे संसार की जो सबसे बड़ी माया है उसको पहचान लेंगे। यह सब लोग एक हैं। इनमें कोई अन्तर नहीं। अब जो हमने वेद वगैरह रचे और जिससे हमने पंच महाभूतों का···हमने कहा कि पांच महाभूतों को मानिए और उसका उससे करिए। ठीक है तो निराकार की बात हो गई।

लेकिन साकार भी चीज है। भक्ति भी है और साकार परमात्मा राम, श्री राम, परशुराम। इतना ही नहीं श्री कृष्ण साक्षात् इस संसार में आए। अवतरण उन्होंने किया। यह साक्षात् श्री विष्णु के अवतरण है, इसमें कोई भी शंका की बात नहीं मेरे लिए। और शिव अवतरण नहीं लेते। शिव का अवतरण नहीं होता। ब्रह्म देव ने भी एक ही अवतरण लिए हैं। लेकिन शिवजी ने कभी अवतरण नहीं लिया, क्योंकि वो सदाशिव हैं। विष्णु के अवतरण हुए हैं और उन अवतरणों में आपको जान लेना चाहिए कि उन्होंने संसार में आ करके हमें आज मनुष्य बना दिया। उनकी वजह से हम बने हैं। और उन्हीं की वजह से हमने यह भी जाना है कि संसार में अवतार आते हैं। लेकिन श्री कृष्ण जी ने यह बातें सिर्फ एक अर्जुन से बताईं। एक अर्जुन से बताई। सबसे नहीं बताई। सब जन-साधारण को बताने की बात है। भक्ति का मार्ग चल रहा था। भक्ति में लोग आह्वान कर रहे थे परमात्मा को। और इधर लोग जो हैं वेद में वो लोग जितने भी पंचमहाभूतों को जागरूक कर रहे थे। और एक बहुत गुप्त तरीके से दूसरा जो मार्ग बन रहा था उसमें राजा जनक जैसे लोग प्रयत्न कर रहे थे कि आत्मा का साक्षात्कार हो जाए। लेकिन यह बात गुप्त। श्री कृष्ण ने यह बात एक अर्जुन से बताई और वह भी घुमा-फिरा कर बताई क्योंकि उन्होंने देखा कि अभी समझ में नहीं आ रही इनके बात। अब गीता पर फिर मैं कभी बोलूंगी। आज तो इतना समय नहीं है। अब जब हमने देखा बाद में कि लोगों में ऐसा है और लोग बेकार में झगड़ा कर रहे हैं तब स्वयं नानक जी संसार में आए थे वो। और उन्होंने कहा कि बेकार में झगड़ा कर रहे हो। क्योंकि उन्होंने सोचा कि मैं ही तो था और मेरी ही जगह अब मेरे ही यह शिष्य लोग अब झगड़ा कर रहे हैं। वो उन्होंने आ करके समझाया कि भई क्यों झगड़ा कर रहे हो? वो चीज एक ही थी, चीज एक ही थी। अब जो यह गुप्त रूप से काम हो रहा था वो उसके बाद। आपको आश्चर्य होगा, बहुत आश्चर्य की बात है कि उस वक्त जो दो बच्चे पैदा हुए थे सीता जी के, वो लव और कुश उन्हें कहते हैं। आपको आश्चर्य होगा और अभी भी आपको पता है कि नहीं, लेकिन हमको तो पता है। आप पता करें, कि दोनों हिन्दुस्तान छोड़ कर उत्तर की ओर चले गए। उसमें से लव जो थे वो कोकेशियस की तरफ गए और जा करके इन्होंने वहाँ राज किया। और इसीलिए रशिया वगैरह में 'स्लाव' कहते हैं, सलव। इसलिए स्लाव कहते हैं उनको। उनकी भाषा ही स्लाव है। और कुश जो थे वो चीन की तरफ गए और उन्होंने अपने को 'कुशान' कहलवाया। पता नहीं, इन लोगों को भी पता है कि नहीं कि लव और कुश की खानदान है और आपस में लड़ रहे हैं, बेवकूफ जैसे। दोनों ही लव और कुश के खानदान हैं। एक स्लाव कहलाते हैं, एक कुशान कहलाते हैं। और दोनों में ही सारे संस्कृत शब्द हैं। अगर आप देखिए तो रूसी भाषा में इतने संस्कृत शब्द हैं, जरा बिगाड़े हुए। जैसे वो किसी चीज को कहेंगे कि बहुत अच्छा है या किसी को मिलेंगे तो नमस्ते करेंगे तो 'खोशो, हरो शिवाय'। उनके इसमें 'प्रवद' कहेंगे, उनके आपने यहां सुना होगा newspaper 'प्रवद'। वह आपके वेद

से 'बद' और 'प्र' माने जिसे कहना चाहिए 'जागरूक' (enlightened)। उनकी सारी भाषा में आप देखिए सारा संस्कृत में ही है। इधर मैं चीन गई थी, मुझे अब भी वहां के सारे शब्द संस्कृत के बने हैं। लेकिन वो भी नहीं जानते कि हम भाई बहन हैं। और मूर्ख जैसे लड़ रहे हैं। क्या करें? कौन उनको समझाए कि तुम दोनों जुड़वे भाई के लड़के हो और क्या कर रहे हो? किस चीज के लिए लड़ रहे हो? इससे कोई तुम्हारे मां को सुख होने वाला है?

अब जो यह बीच की धर्म व्यवस्था हमारे अन्दर बनी हुई है जिसमें अवतरण होते गए और बहुत ही गुप्त रूप से कार्य होता गया। तो उस वक्त यही दोनों बेटे इस संसार में बार-बार पैदा हुए। उसके बारे में हम लोगों को मालूमात नहीं। लेकिन झगड़ा करने में हम लोग बहुत होशियार हैं। पर उसकी हमें मालूमात नहीं, क्योंकि history (इतिहास) में कोई इस चीज को कोई लिखता है? बुद्ध और महावीर यह दोनों बेटे थे। यही दोनों बेटे बुद्ध और महावीर बन कर आए और हम लोग झगड़ा कर रहे हैं। अरे अगर हिन्दू राम को मानते हैं तो उन्हीं के यह दोनों बेटे हैं। झगड़ा किस चीज का कर रहे हो तुम? और फिर भी हम उस चीज की आपको सिद्धता दे सकते हैं।

अब बहुत से लोगों का यह कहना है कि यह चीज किताब में लिखी नहीं। हरेक चीज किताब में लिखने की होती भी नहीं। किताब पढ़ कर आप पूरी बात, गीता तो मेरे समझ में बहुत ही थोड़े लोगों के समझ में आई है। उसका बहुत ही simple (सरल) सी बात है। बहुत ही सीधी सी बात है कि किसी की खोपड़ी में आई ही नहीं। सबके खोपड़ी में से चली गई। तो इसमें यह समझ लेना चाहिए कि मैं जो बात कर रही हूँ उसमें से बहुत सी बातें आपको किताबों में भी नहीं मिलेंगी। क्योंकि मैं जानती हूँ और आपको बता रही हूँ और उसकी मैं आपको सिद्धता दे सकती हूँ कि यह बुद्ध और महावीर जो थे वो कोई और दूसरे नहीं थे। यह श्री राम के लड़के लव और कुश थे। वो अपने ही थे, कोई पराए नहीं थे। कोई कहते हैं कि हम बुद्ध धर्मी हो गए, हम जैनी हो गए। अरे वो हैं कौन? सब सनातन ही तो हैं। जब आप कहते हैं कि हम सनातनी हैं तो आपको सोचना भी चाहिए कि सनातन का आँचल बहुत बड़ा है। उसके नीचे सब लोग आ गए, कोई छूटने वाला नहीं। यही बुद्ध जब कि आए और संसार में इन्होंने सिखाया कि आप मूर्ति पूजा नहीं करो, यह नहीं करो, वो नहीं करो। क्योंकि लोगों ने मूर्ति पूजा की हद कर दी थी, उन्होंने इसके लिए सिखाया। और फिर देखा कि वो चीज छूट कर बुद्ध धर्म इतनी बुरी तरह से फैल गया है और उन्होंने इतनी बेवकूफियां शुरू कर दी हैं तो खुद उन्होंने ही इस संसार में जन्म लिया और वो ही हमारे हिन्दू धर्म के संस्थापक, जिन्हें हम मानते हैं, आदि शंकराचार्य जी वो ही थे। यह बुद्ध ही थे। वे फिर से आए अपना खण्डन करने के लिए। क्योंकि इन बुद्धू लोगों को कौन समझाए, कि 'बुद्ध' माने 'जागरूक'। जिसने जान लिया ऐसे कितने 'बुद्ध' हैं? बुद्धू, बेवकूफ। जैसे वो उनसे कहा कि पूजा नहीं करो तो एक दाँत लेकर के बैठ गए, फलाना लेकर के बैठ गए, और उसी से झगड़ा।

इन्सान को कोई न कोई बहाना चाहिए झगड़ा करने के लिए। और सबमें एक ही तत्व है। सबमें एक ही तत्व है। पर झगड़ा पता नहीं क्यों? कैसे ढूंढ लेते हैं? कोई न कोई बात झगड़े की ढूंढ लेते हैं। आदि शंकराचार्य ने कहा था कि 'न योगे न सांख्येन', योग, सांख्य से कुछ नहीं होने वाला, माँ की ही कृपा से ही सब कुछ होने वाला है। उन्होंने बहुत बड़ी किताब लिखी थी 'विवेक चूड़ामणि'। पता नहीं आप लोग पढ़ते हैं कि नहीं। पढ़ते होंगे जरूर, क्योंकि आप लोग सनातन धर्मी हैं। लेकिन

जिन्होंने इसकी संस्थापना करी वो तो पढ़ते ही होंगे। इतनी बड़ी किताब विवेक चूड़ामणि लिखने के बाद उन्होंने एक दूसरी किताब लिखी जो 'सौन्दर्य लहरी' है। पता नहीं आप लोग पढ़े होंगे। सारा उसमें माँ का वर्णन है, पूरा। यहां तक कि सब उनका आकार-प्रकार, उनका तौर तरीका उनको कौन सा तेल पसन्द है, सर में कौन सा तेल लगाती हैं। इतना बारीक लिख गए। विवेक चूड़ामणि तो इतनी भारी चीज लिख दी और अब यह माँ का वर्णन। यह क्या लिख रहे हैं कहने लगे। उसके सिवाय इलाज नहीं। माँ के सिवाय इलाज नहीं। वो ही सब करेंगी। यह शक्ति का काम है। इसलिए हम सब शक्ति के पुजारी हैं। आज तक आप किसी भी धर्म में रहे, आप सब शक्ति के पुजारी हैं। वेद में मां को 'ई' करके कहा गया है। 'ई' शब्द से, उसका शब्दों का फर्क है, लेकिन शक्ति को ही पाना है। और शक्ति भी क्या शक्ति है ? यह ब्रह्म की शक्ति है। और ब्रह्म क्या है ? यह परमात्मा की इच्छा है, और परमात्मा का प्यार है। अगर परमात्मा को आपसे प्यार न होता तो यह सरदर्द को क्यों लेते ? यह सारी सृष्टि बनाना भी एक बड़ा भारी सर दर्द है। इतनी सारी सृष्टि उन्होंने बनाई क्योंकि उनको आपसे प्यार था। और आज भी उसी प्यार में वो चाहते हैं कि आप उनके साम्राज्य में उतरें। यह सारे झगड़े थे। झगड़ों में कुछ नहीं। सबसे बड़ी सनातन बात यह है कि हम ब्रह्म शक्ति से बने हैं और हमें उसको पाना है। और अगर आपने उसे जाना नहीं तो आपने शक्ति को पाया नहीं।

...कहने लगे कि "वहाँ वारकरी लोग होते हैं। एक एक महीना, दो-दो महीना पैदल चलकर के जाते है वो हुआ। मैं बहुत पैदल चल कर जाता था। महीना-महीना पैदल चलता था, वहाँ जाता था। तो मेरा सर ही फोड़ देते थे लोग। और उसमें परेशान हुआ, भगवान नहीं मिले। फिर मैंने सोचा अब और कोई सा धर्म कर लें। फिर मैंने सब धर्म किए। यह धर्म किया, वो धर्म किया, मेरे हाथ पैर टूट गए। मेरी हालत खराब हो गई। मेरी तन्दुरुस्ती चौपट हो गई। मैंने कहा कि यह कैसा भगवान है। इसको मैं खोज रहा हूं। और यह मेरी तन्दुरुस्ती ही चौपटा देगा, तो मैं कैसे उसको जानूंगा ?" और जब उन्होंने जाना कि हम वहां गए हुए हैं तो हमसे मिलने आए और कहने लगे कि माँ अब बताओ मैं क्या करूं ? मैंने कहा बेकार में तुम इधर से उधर, अपने दल बदलते रहे। अपने माथे पर लिखा हुआ बदलने से कुछ नहीं होता कि मैं फलाना हूँ, ठिकाना हूँ। तुम सिर्फ इन्सान हो, पहली बात। और दूसरे तुम परमात्मा के पुत्र हो। तुम आत्मा हो और कुछ नहीं। उसको तुम्हें पाना है। इस तरह से अपने ऊपर bond (बन्धन) मत मारो। लड़ाई झगड़े होते हैं। आत्मा ही सनातन है, उसको पाना है। आत्मा ही एक चीज है जिसे पाना है। सबने यही कहा है कि क्यों भई इधर-उधर भटकते हो। अपने ही अन्दर खोजो, अपने ही अन्दर आत्मा है।

जब आप आत्मा को पाइयेगा तभी आपको पता होगा कि इन सब मूर्तियों का भी क्या अर्थ है ? यह क्या चीज है ? और इसका हमारे अन्दर स्थान कहां है ? उनको जागरूक कैसे करना है ? इनको जागरूक कैसे करना है ? इनकी प्राण प्रतिष्ठा कैसे करनी है ? तो सिर्फ ब्रह्म की 'बात' ही नहीं है। ब्रह्म को 'पाना' है और उसके बाद इस सारी ब्रह्म विद्या को आपको पूरी तरह से जान लेना है। सारी ब्रह्म विद्या आप जान जाएंगे। यही सहजयोग है। इसको सहज कहते हैं क्योंकि सहज ('सह'= साथ+'ज'=जन्मा) आपके साथ पैदा हुआ है। आपके अन्दर कुण्डलिनी शक्ति है, जो आपके साथ पैदा हुई है। यह जीवन्त है। कोई मरी हुई चीज नहीं है, जीवन्त है। जैसे कि अंकुर होता है उस तरह से वो आपके अन्दर स्थित है। वो जागरूक

हो जाती है। और वो जागरूक होने के बाद आपके अन्दर से ठण्डी-ठण्डी हवा जैसे चैतन्य की लहरियाँ, जिसका वर्णन आदि शंकराचार्य आदि सबने किया हुआ है, ईसामसीह ने भी किया है, वह बहने लग जाती है। तो आप अपनी शक्ति को प्राप्त होके और उसके बाद इस ब्रह्म को प्राप्त होने के बाद। यह ब्रह्म विद्या आपको जाननी है।

हिन्दुस्तान में भी सहजयोग बहुत जोर से फैल रहा है। लेकिन उसका ज्यादा हिस्सा महाराष्ट्र में बहुत ज्यादा चल रहा है। इसकी वजह यह है कि सन्तों की भूमि है, और वहां लोगों ने सन्तों को भुलाया नहीं। वामपंथियों ने बड़ी मेहनत करी है। आपके यहां भी गुरु नानक और कबीर जैसे बड़े-बड़े सन्त हुए। लेकिन हम लोगों ने उनको माना नहीं असल से। दक्षिण में महाराष्ट्र में ऐसी बात है कि न जाने कैसे क्यों मेरी यह समझ नहीं आता कि। हो सकता है रामचन्द्र जी वहाँ पैदल चल कर गए थे, सीता जी के भी वहां चैतन्य फैले हुए हैं। लेकिन लोगों में जरा इस मामले में गहराई। वो इस बात को जानते हैं। और ज्ञानेश्वर जी ने बहुत साफ-साफ लिखा था कि कुण्डलिनी नाम की शक्ति हमारे अन्दर है। और वो अम्बास्वरूप माताजी जब होंगी तभी आपको उसकी प्राप्ति हो सकती है, आदि अनेक चीजें उन्होंने लिख कर रखी हैं। शायद इसी वजह से वो इससे जागरूक हैं। इंग्लैण्ड में भी लोग बहुत जागरूक हैं, क्योंकि इंग्लैण्ड में बड़े भारी 'विलियम ब्लेक' करके कवि हुए हैं। उन्होंने लिखा है कि वो समय आएगा जब इंग्लैण्ड में यह कार्य शुरू होगा। और उन्होंने यहाँ तक कि हमारे आश्रम की जगह तक लिख दी। जहाँ मैं रहती हूँ उस जगह का नाम भी लिख दिया। लेकिन मैं यह नहीं कहूँगी कि यहां सन्तों ने मेहनत नहीं करी। सन्तों ने बड़ी मेहनत करी है। बिहार में मैं गई थी। बिहार में देखा कि सारे के सारे चैतन्य भरा पड़ा है। बंगाल में, पंजाब में, सारा चैतन्य भरा पड़ा हुआ है। पंजाब तो ऐसा चैतन्य से भरा है।

लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि partition (देश विभाजन) हो गया तो क्या हो गया? पता नहीं, लोगों की श्रद्धा ही टूट गई है। और श्रद्धा में एक तरह की नरमाई आ गई। और उसकी वजह से मनुष्य इस ओर नहीं जाता कि उसको पाना है। वो उच्छृंखल है। थोड़ी देर के लिए वो भगवान के पास आ गया, वो सोचता है बहुत हो गया। रास्ते चलते कोई भगवान मिल गया तो सोचता है बहुत हो गया। उसके बाद उनकी अपनी दूसरी परवाह लगी रहती है। उसमें कुछ मेहनत करनी पड़ेगी। कुछ उसके प्रति वाकई (सच्ची) श्रद्धा से लगना पड़ेगा। उधर ध्यान देना होगा। इसलिए मैं देखती हूँ कि जितना फैलाव होना चाहिए उतना होता नहीं है। लोग इस पर श्रद्धा से बैठते नहीं। मेहनत करते नहीं। लेकिन मुझे बड़ी खुशी हुई कि पिछली मर्तबा (बार) मैं आई थी और इस मर्तबा भी आप लोगों ने मुझे यहां बुलाया और इतनी श्रद्धा के साथ आप लोगों ने मेरी बातचीत सुनी है। और इसे पा भी लीजिए। पूरी तरह से पाकर के मैं तो चाहूँगी कि यहाँ पर आप कभी भी चाहें यहाँ पर हमारे बहुत से सहजयोगी लोग रहते हैं जिन्होंने इस चीज को माना है और पाया हुआ है। यहाँ पर बहुत से लोग ऐसे हैं जो कि यह जानते हैं, ब्रह्म विद्या को भी। उनसे भी आप लाभ उठा सकते है। बस इतना जानना है कि इसमें कोई पैसा और कोई चीज नहीं चाहिए। परमात्मा को आप पैसे से नहीं खरीद सकते। और जब पाने की बात है तब तो आपको कोई मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। लेकिन पाने के बाद संजोना पड़ता है। उससे पहले आपको कोई भी मेहनत नहीं करनी। उसके पहले ही आपके पास है, सहज (साथ जन्मा)। इसलिये हो जाता है।

पर आज सहजयोग 'महायोग' की स्थिति में आ गया है क्योंकि पहले सहजयोग जो था जनक

के समय में तो एक नचिकेता के ही लिए बना था। उसके बाद एक दो फूल आए, फिर तीन चार और फूल आए। लेकिन आज समय है वो 'बहार' आ गई है। और इस बहार' में अनेक फूल फल होने वाले हैं। सिर्फ आप अपनी तह तक, आप अपनी गहराई तक उतरिए। असल में होता क्या है कि अब देखो कि यह औरतें चली जा रही हैं। इसका क्या मतलब है ? कि इनमें गहराई नहीं है बिल्कुल। चीज को पा लो मैं कहती हूँ। पा करके थोड़ा उसमें गहरे उतरो। थोड़ी सी गहराई में उतरना चाहिए। और उस गहराई में आपका सारा पूर्वजन्म का पुण्य कृत है। उसमें आप फिर समाइये। पहले थोड़ी सी मेहनत करके गहराई में आप उतर जाइए। और उसके बाद वहाँ जो पूर्वसंचित जितना कुछ है उसे आप पाइयेगा। लेकिन इस तरह से लोग क्या हैं ? एक माताजी का भाषण सुन गए, दूसरे का सुन गए। इस तरह से जो लोग करते है ऐसे लोगों के लिए सहजयोग नहीं है। पर इसका नुकसान बाद में होगा। अभी इसके जो फायदे हैं उनको लेना चाहिए। इसके अनेक फायदे होते हैं। आप जानते हैं यहां पर एक देवी जी बैठी हैं। उनका लड़का एकदम पागल जैसा था। वो अभी यहीं है। उसका पागलपन एकदम ठीक हो गया। कितने ही लोग हैं यहाँ दुनिया में जिनको लाभ हुआ है, जिनकी तन्दुरुस्ती ठीक हो गई। क्योंकि यह सारे सात चक्रों में सारे ही देवता विराजते है। वो जागरूक हो जाने से उनका आशीर्वाद मिलता है। आपके हर तरह के प्रश्न हल होंगे जब कि आप योग में उतरेंगे। कृष्ण ने भी कहा है कि 'योग क्षेम वहाम्यहम्'। योग से पहले आप भगवान से कहें भगवान यह कर दो, वो कर दो। आपका सम्बन्ध ही नहीं है भगवान से, तो क्षेम कैसे होगा। फिर आप कहें कि मैं भगवान से गिड़गिड़ाता रहा। भगवान ने मेरा काम ही नहीं किया। पहले आप 'योग' connection करवा लीजिए। Connection (योग) के बाद फिर आपको कहना भी नहीं पड़ेगा कि फिर क्षेम, क्योंकि आप उनके साम्राज्य में आ गए। आप उनके नगर के वासी हो गए तो वो आपको सम्भालेंगे और देखेंगे। और देखते ही यहां हरेक सहजयोगी आपको बताएगा, एक-एक आदमी अगर लिखने जाए तो पोथी लिख के रख सकता है क्योंकि कितने चमत्कार हुए हैं। ऐसे-ऐसे accidents (दुर्घटनाएं) हुए हैं कि लोग ८०-८० फुट से गिर गए और जैसे कि किसी ने उठा लिया हो। बहुत बड़ी-बड़ी बातें हो गई हैं। वो सब बताने बैठूं तो उसका कोई अंत ही नहीं।

आज आपके मंदिर में परदेस से भी बहुत लोग आ गए हैं। यह गणेश की पूजा कर रहे हैं, और यह शिव जी की पूजा कर रहे हैं और यह विष्णु जी की पूजा कर रहे हैं। इसलिए नहीं कि मैंने उनसे कहा। इसलिए क्योंकि वो जान गए है कि यह बात सही है। वो जान गए हैं। उनके अंदर जो चीज है उसे जान गए हैं। उंगलियों पे आप महसूस कर सकते हैं कि आपके कौन से चक्र पकड़े हुए हैं। और उन चक्रों पर कौन से देवता हैं। उनको आप जान सकते हैं और पूछ सकते है, यह देवता हैं या नहीं। इतना ही नहीं आप लोग जब मुहम्मद साहब को जानेंगे, ईसा मसीह को जानेंगे। जिन्होंने अब तक कुछ नहीं जाना वो और जान जाएंगे। और यह लोग जितना जानते हैं आप लोग नहीं जानते। वजह यह है कि इन लोगों में और हमारे में फर्क है। हम योग भूमि में रह रहे हैं। भारतवर्ष की जो छत्र-छाया है उसमें हम लोग झट से पार हो जाते हैं। कोई समय नहीं लगने वाला। आप सबके सब बहुत जल्दी पार हो जाएंगे, मुझे मालूम है। मैं जानती हूँ एक क्षण भी नहीं लगने वाला। लेकिन चलने वाला नहीं वो। क्योंकि जो चीज आसानी से मिल जाती है उसकी कदर नहीं होती। और इन लोगों के एक एक पर मैंने तीन-तीन महीने हाथ तोड़े। तो इनको बड़ी कदर है। यह गहराई में उतर गए हैं। यह गहराई में उतर गए हैं। उसको इन्होंने

बिल्कुल ब्रह्म विद्या को साक्षात पा लिया है। तो जो भारतीय, जो कि अनेक जन्मों से पुण्य से इस भारत वर्ष में पैदा हुआ है, वो इनसे कम पड़ जाता है। और यह पुण्य आपके पास बहुत है। क्योंकि आप अपनी गहराई नहीं छू पाते। यह मैं आपसे पहले ही आगाह (सचेत) करती हूँ कि पार करने को तो मैं कर दूंगी, लेकिन आगे का आपको देखना होगा। आगे जो मेहनत है वो आपको करनी पड़ेगी। अगर नहीं करी तो 'जो पाया सो खोया' होता है अनेक बार। अनेक लोगों का ऐसे होता है।

मैंने देखा है एक साहब आए थे और चिल्लाने लग गए। एक बड़े भारी आंगन में प्रोगाम हो रहा था। 'माताजी! माताजी! मेरे तो अन्दर से तो बहुत आग निकल रही है। मेरे अन्दर से मैं मर रहा हूँ। आप मुझे ठीक करिए। सारे बदन में blisters (फाले) और जाने क्या-क्या है।' मैंने कहा "अच्छा आपके यहाँ आते हैं।" बहुत भीड़ थी उनके यहाँ, वहाँ। करते करते उनके पहुँचे हम। उनकी कुण्डलिनी जागरूक करने से पाँच मिनट में उनका सब कुछ ठीक हो गया। पाँच मिनट के अन्दर। वो अभी भी हैं यहां पर। उसके बाद कभी वो आए नहीं। कभी उन्होंने पता नहीं किया, कुछ नहीं किया। एक दिन मैं बाजार गई थी कोई चीज खरीदने। वहाँ मिले। अरे, वहां एकदम से पाँव छुआ। मैंने कहा "कौन है भई" कहने लगे "मां भूल गए आप?" मैंने कहा "भई मुझे तो याद नहीं।" और मुझे याद भी नहीं रहता। "असल बात करो।" फिर उन्होंने बताया। बात कहने लगे "मैंने आपका फोटो मैंने अपने मोटर में भी रखा है। मैंने अपने मन में भी रखा है। आपके शरणागत हूँ।" ये है, वो है। मैंने कहा "भई देखो, सहजयोग जो है, वो सामूहिक काम है। अकेले का काम नहीं है, कि आप घर भेले गए या जंगल में बैठ करके, उसमें नहीं। जहाँ दस लोग बैठेंगे वहीं यह कार्य होने वाला है। तो वहीं हम रहेंगे। और जहां एक अकेला सोचेगा कि मां को हम हथिया लें तो हम हाथ आने वाले नहीं। ऐसे हमें लोग नहीं चाहिए। वो चाहिएं कि जो सब मिल करके काम करें।" और फिर एक साल बाद फिर पहुँचे कि फिर मुझे कोई तकलीफ होने लग गई है। तो मैंने कहा कि अब आ गए आप ठिकाने। तो कहने लगे कि क्या मां मुझे सजा मिली है? तो मैंने कहा कि सजा नहीं है। यह जिस छत्र छाया में आप बैठते हैं उसको आप छोड़ करके अगर आप गए तो उसे वह छत्र-छाया क्या करेगी? फिर से उस छत्र-छाया में आ जाएं। यह सामूहिक कार्य है। और इस सामूहिक कार्य को सबको सामूहिक तरीके से करना है। अगर आप चाहें कि माँ का फोटो हम घर ले गए और रोज हम आरती पूजा कर रहे हैं तो सो बात मुझे मंजूर ही नहीं है। सबको एक होना है। यह बहुत बड़ा सामूहिक कार्य है। सबको मिल जुल के रहना है। सब भाई बहन हैं। और हैं कि नहीं, वो। आप उसका साक्षात्कार करिएगा।

जो लोग सहजयोग में इस तरह ब्रह्म विद्या को पाते हैं उनके बहुत से प्रश्न दूर हो गए। उनकी तबीयतें ठीक हो गईं। उनके मन ठीक हो गए। खानदान ठीक हो गए। आपस की रिश्तेदारियाँ ठीक हो गई हैं और सबसे बड़ा कि उनका लक्ष्मी तत्व भी जागरूक हो गया है। इससे बहुत रईस तो कोई भी नहीं होता। इससे कोई सी भी चीज 'बहुत' नहीं होती। 'अतिशयता' तो होती ही नहीं। लेकिन समृद्ध हो गए हैं, समर्थ हो गए हैं, और दूसरों का भला कर रहे हैं। अपने को भी ठीक रखें और दूसरों को भी ठीक रखें। सहजयोग में पार होने के बाद आप लोगों की जागृति कर सकते हैं? और लोगों को पार करा सकते हैं यह शक्ति आपमें आ जाती है। कोई भी हो, पढ़ा नहीं हो, कुछ फर्क नहीं पड़ता। कौन साधु-संत लोग पढ़ लिखे थे? इसको पढ़ने की जरूरत नहीं। यह अंदर होता है। आजकल संसार में बहुत से बड़े-बड़े लोग जन्म ले

रहे हैं। बहुत से बड़े-बड़े जीव जन्म ले रहे हैं। और यह लोग सब पैदायश (जन्म) से पार हैं। और वो जानते हैं कुण्डलिनी का शास्त्र। यहाँ पर भी बहुत से बच्चे ऐसे हैं कि बचपन से ही कुण्डलिनी का शास्त्र जानते हैं। हमारे भी यह है, नातिन है। और हमारे चार, जिसमें तीन तो नातिन हैं और एक लड़की का लड़का है। वो भी चारों के चारों पार हैं और बचपन में ही वो कुण्डलिनी का शास्त्र जानते हैं। छोटे-छोटे बच्चे भी, छः-छः महीने के बच्चे भी, आप को दिखा देंगे। अभी एक लड़की लाए थे। पार है, छः महीने की। वो बता रही थी कि कौन सा चक्र पकड़ रहा है। बराबर उंगली मुंह में डाल रही थी और बराबर बता रही थी कि कौन सा चक्र पकड़ा है। इतने ज्ञानी लोग आज पैदा हो रहे हैं कि। और उनको जानने के लिए ऐसे मां बाप बनना चाहिए, ऐसे नाना नानी और बाबा दादी बनना चाहिए, कि जिससे आप उनको समझ सकें। और बहुत बड़ा काम संसार में होने वाला है और उसकी तैयारी करें।

आज मैं यहीं तक कहूँगी और बाद में कभी मौका होगा तो 'कल्की' की बात कहूँगी, जो अच्छी नहीं रहेगी इतनी। क्योंकि उसमें फिर आपको समझाने वाला कोई नहीं होगा। उसमें फिर आखिरी सफाई का मामला है। वो समय आने से पहले ही सब लोग पार हो जाएं। जिसके लिए आज तक आपने भगवान को माना उसका साक्षात करें, और आप उसे लें, यही मुझे आपसे विनती है। और मैं माँ के रूप में मैं आपको समझाती हूँ। किसी भी बात का बुरा न मानें और इसे बुद्धि में न बैठाएं, चौखट पर, कि मां ने ऐसा क्यों कहा, माँ ने वैसा क्यों कहा। मैं एक भी बात झूठ नहीं बोलती हूँ और मुझे आपसे कुछ भी लेने का नहीं। Election (चुनाव) भी जीतने का नहीं। मेरा कोई लेना नहीं बन पड़ता। आपको बस देना ही देना है। इसलिए आप इस तरह की बेकार की बातें कभी न सोचना कि मां ने ऐसे क्यों कहा, वैसे क्यों कहा। माँ को सच बोलना पड़ेगा। हालांकि बहुत मिठास से बता रही हूँ सब बात, लेकिन हो सकता है कि, बुद्धि है न, मैंने पहले ही कहा, यह हर चीज को पकड़ लेगी, जिससे झगड़ा खड़ा हो और यह आप ही से झगड़ा आप अपना कर रहे हैं, किसी दूसरे से नहीं, क्योंकि आपको अपनी शक्ति पानी है, आपको समर्थ होना है और आपको अपनी आत्मा को जानना है। इसमें कोई शक नहीं। और वही कार्य है और उसके मामले में बेकार के झगड़े अपने ही से मत करें। आपने पढ़ा लिखा होगा, उसको एक तरफ रख दीजिए। सारे पढ़ लिखने से भी ऊंची चीज है आत्मा को पढ़ लेना। 'एक ही अक्षर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होए।' यह प्रेम वो नहीं है, अपने बच्चों को प्यार करो, यह प्रेम नहीं है। यह परमात्मा का प्रेम है, जो ब्रह्मशक्ति के रूप में आपमें से बहना शुरू हो जाता है। इसे आप प्राप्त करें। बहुत-बहुत धन्यवाद आप लोगों का।

अब doctor (डाक्टर) हो, scientist (वैज्ञानिक) हो, कोई हो यह चीज सब ज्ञानों से परे है। इसको आप पा लें। उसके बाद आप फिर बात करें। बस ऐसे हाथ करना है सीधे। उसमें कोई ज्यादा मुश्किल नहीं। ऐसे सीधे हाथ करके और आप आँख बंद कर लें, बस।

सहस्रार चक्र*

नई दिल्ली
४ फरवरी, १९८३

आज मैं आपको अन्तिम चक्र, सहस्रार, के बारे में बताऊंगी। यह सहस्रार अन्तिम चक्र, जो है वो मस्तिष्क के तालू क्षेत्र (Limbic area) 'आंगिक क्षेत्र' के अन्दर होता है। हमारा सिर एक नारियल जैसा है। नारियल के ऊपर जटाएं होती हैं फिर उसका एक सख्त खोल(Nut)होता है, फिर एक काला खोल और उसके अन्दर सफेद गिरी और उसके अन्दर रिक्त स्थान (space) और पानी होता है। हमारा मस्तिष्क भी इसी प्रकार बना होता है। इसीलिए नारियल को "श्रीफल" कहा जाता है। यह श्रीशक्ति जो है उसका फल है। श्री शक्ति दांयीं तरफ की शक्ति है, और बांयीं तरफ की शक्ति ललिता-शक्ति है। तो हमारे अन्दर दो चक्र हैं—बांयें कंधे के जरा नीचे ललिता चक्र और दाहिने कंधे के जरा नीचे श्री चक्र। ये दो चक्र, दांयीं तरफ महासरस्वती शक्ति और बांयीं तरफ महाकाली शक्ति को चलाते हैं। कुण्डलिनी शक्ति दोनों के मध्य बीचोंबीच है। उसे उठकर अलग-अलग चक्रों को भेदकर Limbic area में प्रवेश करना होता है और वहां सात चक्रों को प्रकाशित करना होता है। तो भी वह छः चक्रों को भेदकर Limbic area में प्रवेश करती है और मस्तिष्क में स्थित सात पीठों को, जो Limbic area की मध्य रेखा पर रखे गये हैं, प्रकाशित करती है। तो अगर हम पीछे से शुरू करें तो सबसे पीछे मूलाधार चक्र है, उसके चारों तरफ स्वाधिष्ठान, फिर नाभि, फिर अनहत, फिर विशुद्धि और उसके बाद आज्ञा चक्र होता है। इस तरह यह छः चक्र मिलकर सातवां चक्र सहस्रार बनता है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है जो हमें पता होनी चाहिए। श्री चक्र दांयीं ओर की कार्य शक्ति है और ललिता चक्र बांयी ओर की कार्य शक्ति है। अतः जब कुण्डलिनी नहीं जागृत होती, तो हम दांयीं ओर की शक्ति से शारीरिक और मानसिक कार्य करते है, इसलिये हमारा मस्तिष्क दांयीं ओर की क्रिया करता है। अतः हमारा मस्तिष्क श्रीफल की तरह है। सहस्रार, वास्तव में छः चक्रों का समूह है, और यह एक खाली स्थान है, जिसके दोनों तरफ एक हजार नाड़ियां होती हैं और जब प्रकाश Limbic area में आता है, तब इन नाड़ियों का प्रज्ज्वलन होता है और वे लौ (ज्वाला) के समान दिखाई देती हैं, बहुत ही सौम्य लौ के समान दिखाई देती हैं और इन सबकी लौ में वो सभी सात रंग होते हैं, जो इन्द्रधनुष में दिखाई देते हैं। परन्तु अन्तिम लौ अन्त में समग्र लौ बन जाती है, यह बिलकुल (crystal clear) स्वच्छ लौ होती है। अतः ये सब सात तरह के प्रकाश अन्त में एक स्वच्छ (crystal clear) प्रकाश बन जाते हैं।

सहस्रार में एक हजार नाड़ियां होती हैं जिन्हें एक हजार पंखुड़ियां बोलते हैं। लेकिन यदि आप मस्तिष्क को आड़ा (transverse) काटें या समतल (horizontal) काटें तो आप देख सकते हैं कि ये सब नाड़ियां इस तरह से, पंखुड़ियों की तरह, Limbic area में रखा होती हैं। और अगर आप इस तरह से (vertically, खड़ी) काटें, तो आप पायेंगे कि हरेक नाड़ियों के संग्रह में कई नाड़ियां हैं। इस प्रकार मस्तिष्क प्रदीप्त होने के

*परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी जी के अंग्रेजी भाषण का अनुवाद

पश्चात् सहस्रार लौ के एक जलते हुए गट्ठे (burning bundle) के समान दिखाई देता है। यह बड़ा गहन विषय है।

इस प्रकार कुण्डलिनी द्वारा मस्तिष्क प्रदीप्त कर देने पर सत्य की आपके मस्तिक में अनुभूति होती है। इसीलिए यह 'सत्यखण्ड' कहलाता है, यानि आप सत्य को, जो आपके मस्तिष्क द्वारा ग्रहण होता है, देखना शुरू कर देते हैं। क्योंकि इससे पहले जो कुछ भी आप अपने मस्तिष्क द्वारा देखते हैं, सत्य नहीं होता। जो आप देखते हैं सिर्फ बाह्य रूप ही है। यानि आप रंग देख सकते हैं, आप रंगों के अलग-अलग रूप देख सकते हैं, आप वस्तु की उत्तमता (quality) को देख सकते हैं। लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि क्या यह कालीन किसी संत ने इस्तेमाल किया हुआ है? आप यह नहीं बता सकते कि यह किसी देवी व्यक्ति ने बनाया है या किसी दानव ने। आप यह भी नहीं बता सकते कि यह व्यक्ति अच्छा है या बुरा है। आप यह भी नहीं बता सकते कि यह देवता (deity) धरतो माता के अन्दर से निकले हैं या नहीं। आप अपने किसी रिश्तेदार के बारे में यह नहीं बता सकते कि यह अच्छा रिश्तेदार है या बुरा रिश्तेदार, या वह किस प्रकार का व्यक्ति है, वह गलत प्रकार के लोगों के पास जाता है या सही लोगों के पास जाता है, उसके गलत सम्बन्ध हैं या ठीक? यहां 'ठीक' का मतलब देवी से है। तो आप अपने मस्तिष्क से देवी के बारे में कुछ भी नहीं जानते। कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं जानते। एक मनुष्य की आध्यात्मिकता को परखना आपके लिए असंभव है जब तक कुण्डलिनी Limbic area में न पहुँच जाये। आप यह नहीं मालूम कर सकते कि यह मनुष्य सच्चा है या नहीं। यह गुरु सच्चा है या नहीं। क्योंकि दैव्यता (Divinity) की आपके अपने मस्तिष्क में अनुभूति नहीं हो सकती, जब तक कि आपकी आत्मा का प्रकाश इसमें प्रकाशित नहीं होता।

आत्मा हृदय में अभिव्यक्त होती है, हृदय में प्रतिबिम्बित होती है। आत्मा का केन्द्र हृदय में होता है ऐसा कह सकते हैं। लेकिन वास्तव में आत्मा का स्थान ऊपर यहां है, जो सर्वशक्तिमान भगवान की आत्मा है, जिसे आप 'परवरदिगार' कहते हैं या 'सदाशिव' या आप इसे 'रहीम' कह सकते हैं। आप उसे अनेक नामों से पुकार सकते हैं, जो प्रभु निरंजन के बारे में प्रयोग होते हैं—निरंजन, निरंकार, हरेक प्रकार के शब्द जो "निर", 'निः' से शुरू होते हैं। शरीर में हरेक चक्र पर आप एक अलग प्रकार का आनन्द प्राप्त करते हैं। कुण्डलिनी जागने के बाद हरेक चक्र का एक अलग प्रकार का आनन्द होता है और कुण्डलिनी के ऊपर चढ़ते समय प्रत्येक चक्र पर जो आनन्द प्राप्त होता है उसका अलग-अलग नाम है। जब कुण्डलिनी सहस्रार में आती है, तब जो आनन्द प्राप्त होता है, उसे 'निरानन्द' कहते हैं। 'निर' का अर्थ है सिर्फ, आनन्द ही आनन्द, और कुछ भी नहीं। आश्चर्य कि मेरा नाम भी नीरा' है। अपने परिवार में मुझे नीरा पुकारा जाता है। नीरा का मतलब है 'मेरी', 'मरियम', क्योंकि इसका अर्थ है मैरीन (marine), 'नीरा' जल है, संस्कृत भाषा में 'नीर' का अर्थ जल होता है। तो मस्तिष्क में इसे निरानन्द कहते हैं।

अन्त में इस अवस्था का उन्मोचन (शुभारम्भ) होता है। सर्वप्रथम आपको जो अनुभूति प्राप्त होती है वह 'सत्य' होती है। इन सज्जन को क्या तकलीफ है, यह आप अपनी उंगलियों पर देखते हैं। तो पहले आप अपने चित्त से उंगलियों पर देखते हैं। आप अपने चित्त से जानते हैं कि कौनसा चक्र, कौन सी उंगली की 'पकड़' है। तब आप अपने मस्तिष्क की सहायता से पहचानते हैं कि कौनसा चक्र खराब है। क्योंकि अगर आप कहें कि

इस उंगली की पकड़ है तो इसका मतलब यह नहीं कि यह विशुद्धि चक्र है। लेकिन आपका मस्तिष्क यह बता सकता है कि यह विशुद्धि चक्र है और वह दर्शाता है कि इस व्यक्ति को विशुद्धि चक्र की तकलीफ है। लेकिन फिर भी यह मस्तिष्क पर आधारित (rational) हैं। क्योंकि आप पहले देखते हैं कि कौनसी उंगली की 'पकड़' है और फिर आप बताते हैं कि कौनसा चक्र खराब है।

लेकिन जब 'सत्यखण्ड' यानि सहस्रार और ज्यादा खुल जाता है, तो आपको सोचने की जरूरत नहीं पड़ती; आप तुरन्त कह देते हैं। उस समय आपके चित्त' में और आपके 'सत्य' में कोई अन्तर नहीं रह जाता। प्रकाशमान 'चित्त' और प्रकाशमान 'मस्तिष्क' एकाकार हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए कोई समस्या नहीं रह जाती और उंगलियों पर देखने की जरूरत नहीं पड़ती है। उंगलियों पर कुछ देखकर और फिर मस्तिष्क से जानने की कोई जरूरत नहीं रह जाती है। जैसा कि आपने सहज-योग में सीखा है कि अगर इस उंगली में कुछ गड़बड़ है, तो इसका मतलब आज्ञा चक्र खराब है, यह आवश्यक नहीं। आप बस कह देते हैं कि आज्ञा चक्र खराब है। आपने जैसा कहा, वास्तव में वैसा ही होता है।

उसके बाद, मस्तिष्क और भी ज्यादा खुलता है। सर्वप्रथम, जैसे मैंने बताया यह चित्त के साथ एकाकार हो जाता है। फिर, जब यह पूर्णतया 'आत्मा' के साथ एकाकार हो जाता है, तब आप जो कुछ भी कहते हैं वह सत्य ही होता है। आप बस कह देते हैं, और वही वास्तव में होता है। इस प्रकार यह मस्तिष्क तीन नये आयामों में उन्मुक्त होता है, खुलता है। सर्वप्रथम यह तार्किक निष्कर्षों (logical conclusions) द्वारा सत्य को व्यक्त करता है। जैसा मैंने बताया, मेरे अगर इस उंगली की पकड़ है तो इसका मतलब विशुद्धि चक्र खराब है, और फिर आप उस व्यक्ति से पूछते हैं, "क्या आपको यहाँ कुछ तकलीफ है?" वह कहता है, "हां है।" तब आपका मुझमें विश्वास होता है और आप विश्वास करते हैं कि यह जो विशुद्धि चक्र दिखाई दे रहा है सो सत्य है। यह एक तर्क पर आधारित निष्कर्ष है। क्योंकि आपने प्रयोग किया, आप देख रहे हैं और फिर भी सन्देह कर रहे हैं कि माताजी जो बताती हैं वह सत्य है या नहीं। फिर आप निश्चित हो जाते हैं कि हां, यह यह ऐसा ही है। आपने देखा है कि यह विशुद्धि चक्र ही है। अतः सत्य तर्कानुसार मस्तिष्क को स्वीकार्य हो जाता है। फिर भी मस्तिष्क बाह्य स्तर (gross level) पर ही कार्यशील रहता है।

दूसरी अवस्था में, जैसा मैंने बताया आप विश्वास करते हैं, पक्की तरह से जान जाते हैं कि इसका अर्थ विशुद्धि चक्र है, इसके बारे में कोई शंका नहीं। इस प्रकार 'निरविकल्प' की अवस्था आरम्भ हो जाती है, जब मेरे और सहजयोग के बारे में कोई शंका नहीं रह जाती। लेकिन उस समय आपके अन्दर मस्तिष्क का और उन्मोचन (खुलना) प्रारम्भ हो जाता है। इसके लिए आपको 'ध्यान' (meditation) करना पड़ता है। नम्रता में (in humility) स्थित होकर आपको ध्यान करना पड़ता है। इस नई अवस्था के लिए जब आपका चित्त स्वयं आपके मस्तिष्क, प्रदीप्त मस्तिष्क, में विलय हो जाता है इसके लिए व्यक्ति को अत्यन्त सचाई और नम्रतापूर्वक सहजयोग को आत्मसमर्पण करना पड़ता है।

अब जब आप चैतन्यलहरियां (vibrations) प्राप्त कर लेते हैं तब आप क्या करते है? लोगों की अलग-अलग प्रतिक्रिया होती है। कुछ लोग इन लहरियों का मूल्य तक नहीं समझते। कुछ लोग सीखने की कोशिश करते हैं कि इसका क्या अर्थ है? और कुछ लोग तुरन्त सोचने लगते हैं, "अब हम आत्मसाक्षात्कारी हो गए हैं और इसको, उसको

आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं।", वे अहंकार की सवारी (egotrip) करने लगते हैं। जब वे अहंकार की सवारी करने लगते हैं, तो वे अपने आपको असफल पाते हैं और उन्हें जहां से शुरू किया था वहीं वापस आना पड़ता है। यह सांप और सीढ़ी के खेल की तरह होता है। तो चैतन्यलहरियों के प्रति बहुत ही विनम्र और ग्राही, आदरपूर्ण (receptive) प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

बाह्य रूप में, जैसा मैंने आपको बताया कि मस्तिष्क में पिता (सदाशिव) का स्थान है। इस लिये अगर आप पिता (सदाशिव) के विरुद्ध कोई पाप करते हैं, तो आगामी नये आयाम खुलने में समय लगता है। फिर हम पुस्तक पढ़ने लगते हैं और यद्यपि बताया गया है कि पहले पुस्तक की चैतन्य लहरियाँ (vibrations) देखो और फिर उसे पढ़ो। लेकिन आप कहते हैं, 'क्या बुरी बात है, हमें अन्य पुस्तकें भी पढ़नी चाहिये। तो जैसा मैंने बताया आप सांप सीढ़ी के खेल में नीचे गिर जाते हैं। यह भी एक सांप है। सोचते है "ध्यान करने की क्या आवश्यकता है? मेरे पास समय नहीं है, मुझे यह करना है, वह करना है।" परिणाम आपकी उन्नति नहीं होती है।

दूसरी बात बड़ी स्थूल है। कुछ बहुत ही स्थूल (gross) व्यक्ति सहजयोग में प्रवेश कर लेते हैं। कोई बात नहीं। लेकिन पहली बात जो आपको जरूर जाननी चाहिए, वह यह है कि आपको सहजयोग में ईमानदार, बहुत ही ईमानदार, रहना पड़ेगा। ईमानदारी से मतलब है, मैंने देखा है जैसे कि कहीं कोई भोज(खाना-पीना)या शादी की पार्टी है तो वे आत्म सम्मान को तिलांजलि देकर चुपके से घुस जायेंगे। उन्हें कोई विचार नहीं कि इसके लिए पैसा कौन देगा? वे अपने सारे परिवार को ले आएंगे और बैठ जाएंगे। फिर, ऐसे लोग भी होते हैं जो सहजयोग में जो पैसा देना चाहिए, उससे बचते हैं। मान लीजिए कि खाना खा रहे हैं या सफर कर रहे हैं या विदेश से आ रहे हैं, तो उन्हें अपने सफर के लिए और खाने-पीने के लिए पैसा देना चाहिये। आपको पता है बहुत बार भारी पैसा देना पड़ता है। कोई बात नहीं, मैं इसका विचार नहीं करती। लेकिन यह आपके लिए ठीक नहीं। मुख्य बात यह है कि यह आपके लिए ठीक नहीं है। तो पैसे के मामले में आपके सहजयोग के प्रति कैसे आचरण हैं, यह भी बहुत महत्वपूर्ण बात है। यद्यपि वह बहुत ही स्थूल सी (gross) प्रतीत होती है, लेकिन यह आपकी उन्नति में बहुत समस्या उत्पन्न कर सकती है, क्योंकि उससे नाभि खराब हो जाता है। और जैसा कि आप जानते हैं कि अगर नाभि खराब हो गई तो यह खराबी सारे भवसागर (void) पर व्याप्त हो जाती है, और अगर भवसागर खराब हो गया तो एकादश रूद्र की संहार शक्तियां जो यहां पर हैं, पकड़ी जाती हैं।

तो सहजयोग में आने से पहले यह सब ठीक था। आप सब प्रकार के दुष्कर्म करते थे और आप अनायास नरक में पहुँच जाते। नरक में जाना तो बहुत ही आसान है। दो छलांग लगाओ और नरक में पहुँच जाओ। बाकी सब कुछ आप जानें। लेकिन नरक में जाना सबसे आसान काम है। इसके लिए आपको कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती। लेकिन जब आप ऊपर उठ रहे हैं, उन्नति कर रहे हैं, तब थोड़ा कठिनाई है। आपको ध्यान रखना है कि आप लड़खड़ाएं (डगमगाएं) नहीं, गिरें नहीं, और ऊपर उठते रहें।

इसलिये आपको सतर्क रहना है कि आप अपनी पुरानी आदतों में तो नहीं फंस रहे हैं। कुछ लोगों में सहजयोग को नुकसान पहुँचा कर पैसा बचाने की आदत होती है। कुछ लोगों को सहजयोग को क्षति पहुँचा कर पैसा कमाने की आदत होती है। कुछ लोगों को उन्हें जो पैसा देना चाहिये वह न

देने की आदत होती है, इत्यादि। यह छल-कपट के समान है। ये लोग शीघ्र सहजयोग से बाहर चले जाते हैं। भले ही शुरू में ये लोग बहुत बड़े नेता लगें, लेकिन वे देखते-देखते यों ही बाहर निकल जाते हैं। कई बार लोग मुझसे पूछते हैं कि आप पैसे का हिसाब-किताब (account) क्यों नहीं रखती हैं? परन्तु सहजयोग में मुझे कोई हिसाब-किताब (account) आदि रखने की जरूरत नहीं है, क्योंकि सहयोगी मेरे मुनीम हैं। अगर आप सहजयोग से चाल-बाजियां करने की कोशिश करते हैं, तो आपका नाभि चक्र क्षति ग्रस्त होता है और आप अपनी चेतना खो बैठते हैं। जो आपके साथ कभी नहीं हुआ होता। एक ओर आपने हजारों रुपये बनाए, किन्तु दूसरी ओर हजारों रुपये (सहजयोग की बहुमूल्य सम्पदा) खो बैठते हैं। आपको किसी भी प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ सकता है, जो मैं नहीं बता सकती। और फिर आप कहते हैं कि यह समस्या कैसे आई? अतः यदि आप अपनी साधना (seeking) में ईमानदार नहीं हैं तो नाभि चक्र की पकड़ तब आती है। साधना (seeking) की ईमानदारी का सिर्फ यह मतलब नहीं कि शब्दों में कह देना "मैं साधक हूं" बल्कि इसका यह अर्थ भी है कि आपका अपने प्रति और दूसरों के प्रति कैसा आचरण है। आपको अपने प्रति ईमानदार रहना चाहिए कि आप ध्यान (meditation) के लिए बैठें, अपना अन्तर-योग सुधारने की कोशिश करें और अपनी निर्विचार चेतना (thoughtless awareness) को बढ़ाएं। उस स्थिति को प्राप्त करने की कोशिश करें, जहां आप सचमुच ही निर्विचार अनुभव करें। इस ईमानदारी का मधुर रस मिलता है और अपने निजी अस्तित्व (being) अर्थात् आत्मा में आप उत्तरोत्तर ऊंचे और गहरे उतरते जाते हैं।

सर्वप्रथम आप मुझ पर निर्भर करते हैं कि "आखिर माताजी सब कुछ करेंगी। जब मैं माताजी के पास गया तो मेरा सहस्रार खुल गया। यह हुआ, वह हुआ।" लेकिन आप स्वयं ऐसा काम क्यों नहीं करते जो आपका सहस्रार खोलने में सहायक हो। तो सहस्रार का खुलना बहुत ही आवश्यक है।

आश्चर्य की बात है ऐसी रचना है कि सहस्रार में ब्रह्मरन्ध्र एक ऐसे बिन्दु पर है जहां हृदय (अनहत) चक्र है। अतः यह जानना आवश्यक है कि ब्रह्मरन्ध्र का आपके हृदय से सीधा (direct) सम्बन्ध है। अगर आप सहजयोग को हृदय से न करके बाह्य रूप में (superficially) ही करेंगे, तो आप बहुत ऊंचे नहीं उठ सकते। मुख्य बात यह है कि आपको इसमें पूर्ण हृदय देना है। जैसे कि कुछ लोग सहजयोग में आते हैं और पीछे बुड़बुड़ाते रहते हैं, "यह ऐसा होना चाहिए था, वह ऐसा होना चाहिए था" वगैरह-वगैरह, ऐसे लोगों को ईसा-मसीह ने "बुड़बुड़ाने वाली जीवात्माएं" (murmuring souls) कहा है। उन्होंने कहा था "इन बुड़बुड़ाने वाली जीवात्माओं से सावधान रहो।" ऐसे सभी व्यक्ति जो पीछे बुड़बुड़ाते हैं और फायदा उठाते रहते हैं, जैसे कि वे दूसरों को बचाने की कोशिश कर रहे हों, ऐसे लोग बहुत दुःख उठा सकते हैं। क्योंकि वे एक दोहरा छल कर रहे हैं। प्रभु के साम्राज्य में जब आप प्रवेश करते हैं तो यह दोहरा छल बहुत ही खतरनाक होता है। किसी भी राज्य के, किसी भी राज्य के अगर आप नागरिक हैं और आप उसके प्रति विश्वासघात करते हैं, तो आपको दण्ड मिलता है। लेकिन 'प्रभु के साम्राज्य में, यह इतनी आनन्दमय है, पूर्णतया आनन्दमय, पूर्ण आशीर्वाद आप पर न्यौछावर कर दिये जाते हैं, पूर्णतया, हर सम्पदा – स्वास्थ्य, धन, मानसिक, भावनात्मक सभी प्रकार की सम्पदा आपको सहजयोग में प्राप्त होती है, निस्संदेह। लेकिन जब आप इतने सम्पन्न (blessed) किये जाते हैं, तो आपको क्षमा भी प्रदान की जाती है, अनेक बार की जाती है और आपको बहुत लम्बा अवसर प्रदान किया

जाता है। किन्तु यदि आप नहीं संभलते तो आपका विनाश होता है, पूर्ण विनाश, आधा नहीं।

अत: वे लोग जो सोचते हैं कि वे सहजयोग से बेईमानी कर सकते हैं, बहुत सतर्क रहें। कृपया ऐसा न करें, अगर आप सहजयोग में रहना नहीं चाहते, तो अच्छा होगा आप चले जाएं, हमारे लिए और आपके लिए भी यही अच्छा है। क्योंकि अगर आप बेईमानी करते हैं, या छल-कपट करते हैं तो आप कष्ट भोगते हैं और फिर आप अजीब और हास्यास्पद (funny) लगते हैं। तो लोग कहने लगते हैं कि सहजयोग में क्या बुराई है ? और हम बेमतलब भुगतेंगे (बदनामी के कारण)। क्योंकि हम आपको दर्पण में नहीं दिखा सकते कि यह आदमी बहुत ही, बहुत ही ज्यादा विश्वासघाती रहा था। हम यह नहीं दिखा सकते। इस प्रकार पहले हमें बदनामी मिलेगी और दूसरे इस तरह के आचरण से आपको भी हानि होगी। अगर आपको हानि हुई तो भी हमें बदनामी मिलेगी कि ऐसा कैसे हुआ ? लेकिन अगर आप सहजयोग और अपनी साधना (seeking) के बारे में ईमानदार हैं तो आप अनुमान नहीं लगा सकते कि भगवान आपकी कितनी देखभाल करते हैं। जो भी व्यक्ति जो आपको नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगा, वह बहुत हानि भोगेगा और उसे आपके रास्ते से हटा दिया जाएगा। भगवान आपकी प्रत्येक बात में रक्षा करते हैं और पूरे चित्त से और पूरी सावधानी से आपकी देखभाल करते हैं। वे इतना प्रेम करते हैं कि उनकी दया का बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता है। उसकी केवल अनुभूति की जा सकती है और वह समझा जा सकता है।

अब समस्या यह है कि जो लोग बेईमान होते हैं, वे अपने पूर्व संस्कार (background) की वजह से, कभी-कभी अपनी शिक्षा की वजह से, अपने पालन-पोषण (upbringing) की वजह से या कायरता की वजह से ऐसा करते हैं। एक और चीज जो आपको बेईमान बना सकती है वह है आपके पूर्वजन्मों के संस्कार और उसी के अनुसार आप जन्म लेते हैं और उसीके अनुसार आपकी कुण्डलिनी की अवस्था होती है।

लेकिन आत्मसाक्षात्कार के बाद जो लोग महान पुरुषार्थी और संकल्प वाले होते हैं इतनी प्रगति से ऊंचे उठते हैं कि तारों, ग्रहों, नक्षत्रों आदि की सारी समस्याएं लुप्त हो जाती हैं। और आप एक 'सहजयोगी' बन जाते हैं अर्थात् एक नवजात, बिलकुल भिन्न व्यक्तित्व (personality) जिसका अपने विगत जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता, जिस प्रकार एक अंडे का एक सुन्दर पक्षी बन जाता है।

तो, जब यह कुण्डलिनी यहां पहुँच जाती है तो सहस्रार में प्रवेश पाने के मार्ग में सर्वप्रथम जो रुकावट आती है वह है एकादश रुद्र। ग्यारह संहार शक्तियाँ यहाँ होती हैं, पांच इस तरफ, पांच उस तरफ, और एक बीच में। हमारे द्वारा किये गये दो प्रकार के पापों से इन रुकावटों का निर्माण होता है। अगर हम अपना सिर गलत (मिथ्या) गुरुओं के आगे झुकाते हैं, उनके दुष्ट मार्ग को अपनाते हैं तो दाहिनी ओर की पांच रुद्र शक्तियों में खराबी आती है। अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति के आगे झुके हैं जो गलत किस्म का व्यक्ति है और भगवान के विरुद्ध है तो दायीं ओर समस्या उत्पन्न हो जाती है। अगर आप यह सोचते हैं 'मैं अपनी देखभाल खुद कर सकता हूँ, मैं अपना गुरू स्वयं हूँ, मुझे कौन शिक्षा दे सकता है, मैं किसी को बात नहीं सुनना चाहता और मैं भगवान में विश्वास नहीं करता, भगवान कौन है ? मैं भगवान की परवाह नहीं करता।' अगर इस प्रकार की भावनाएं आपके अन्दर हैं तो आपकी दायीं ओर नहीं, बल्कि बायीं ओर खराबी आ जाती है।

क्योंकि आपका दायां भाग (पार्श्व, बाजू) घूम कर इधर (बायीं ओर) और बायां भाग दाहिनी तरफ आ जाते हैं। अतः ये दस चीजें और एक 'विराट विष्णु' का स्थान, क्योंकि हमारे पेट (stomach) में भी दस गुरुओं के स्थान हैं और एक विष्णु का स्थान है, इन सब में खराबी आ जाती है। तब साधना में भी गलती होती है और ये दस गुरू अपना स्थान त्याग कर देते हैं। तब आपको इस एकादश रुद्र की पकड़ हो जाती है। जब इस प्रकार की चीज आपके अन्दर आ जाती है, जैसे कि मैंने बताया, एक इस ओर (ईड़ा) और एक उस ओर (पिंगला), तो जिन लोगों ने गलत प्रकार के व्यक्तियों के आगे सिर झुकाया है, उनका ऐसा स्वभाव या ऐसा व्यक्ति बन जाता है जिससे कैंसर जैसी असाध्य (incurable) बीमारियों का आक्रमण हो सकता है। जिन लोगों ने गलत व्यक्तियों के आगे सिर झुकाया है उनको कैंसर या इस प्रकार की कोई भी बीमारी हो सकती है।

अब जो लोग सोचते हैं कि मैं किसी और से अच्छा हूँ, मैं भगवान की परवाह नहीं करता, मुझे भगवान नहीं चाहिए, मुझे इससे कोई मतलब नहीं, ऐसे लोगों के बायीं ओर के एकादश रुद्र में खराबी आती है। और बायीं ओर के एकादश रुद्र की पकड़ भी अत्यधिक खतरनाक होती है क्योंकि ऐसे लोगों को शारीरिक रूप में दायीं ओर (पिंगला) की तकलीफें, जैसे हृदय रोग, और दायीं ओर की अन्य प्रकार की तकलीफें हो जाती हैं।

अतः कुण्डलिनी के सहस्रार में प्रवेश पाने के विरुद्ध जो सबसे बड़ी रुकावट आती है, वह एकादश रुद्र है, जो भवसागर (void) से आता है, और जो 'मेधा' यानी मस्तिष्क के फर्श (plate) को ढकता है। इस तरह यह लिम्बिक (तालू) क्षेत्र (limbic area) में प्रवेश नहीं कर सकती। यहां तक कि वे लोग जो गलत गुरुओं के पास जा चुके हैं, अगर सही निष्कर्ष पर पहुँचें और सहजयोग के सम्मुख आत्म-समर्पण कर दें, अपनी त्रुटियों को स्वीकार करें, और कहें कि मैं स्वयं ही गुरू हूँ, तो वे ठीक हो सकते हैं। और जो लोग यह कहते हैं 'मैं ही सबसे बड़ा हूँ, मैं भगवान में विश्वास नहीं करता, मैं किसी भी ईश्वर के दूत (prophet) में विश्वास नहीं करता—ईश्वर के विरुद्ध या ईश्वर के दूत के विरुद्ध होना एक ही बात है—ईश्वर विरोधी व्यक्तित्व जो इस तरह की बात करते हैं, और इस लिये समस्याओं का निर्माण करते हैं, अगर वे अपने को विनम्र बनाएं और सहजयोग को, 'सुपर कौंशस' (super conscious) अर्थात मध्य मार्ग को, परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश पाने का एक मात्र मार्ग' के रूप में स्वीकार करें तो वे भी ठीक हो सकते हैं।

मैंने देखा है कि जो लोग तांत्रिक थे, बचा लिए गये हैं। मैंने देखा कि जो लोग सब प्रकार की गलत चीजें कर चुके थे, बचा लिए गये हैं। जो लोग विभिन्न संगठनों के सदस्य थे, बचा लिए गये हैं। लेकिन किसी को भी विश्वास दिलाना कि जो कुछ भी वे कर रहे हैं गलत काम है और उन्हें सही रास्ते पर आ जाना चाहिए, बहुत कठिन काम है।

अतः प्लूटो के विरुद्ध एक नक्षत्र उत्पन्न हुआ और यही नक्षत्र है जो कैंसर की बीमारी लाया है। क्योंकि प्लूटो नाम का नक्षत्र कैंसर की बीमारी को ठीक करता है, यही सब असाध्य बीमारियों के लिए हैं। अतः जो लोग अन्धाधुंध गलत मार्ग पर चलते जाते हैं, उन्हें अजीब तरह के हृदय-रोग, दिल-धड़कना (palpitation), अनिद्रा (insomnia), उल्टियां, चक्कर आना, उल्टासीधा बकना, हो जाते हैं। गलत गुरू के पास जाना और उसके आगे सिर झुकाना बहुत ही गम्भीर बात है। इस प्रकार के आदमी के लिये सहस्रार में प्रवेश निषिद्ध हो जाता है। जो लोग सहजयोग के विरुद्ध हैं उनका सहस्रार बहुत ही कठोर (सख्त)

होता है, एक बादाम या अखरोट के बाहरी खोल (nut) की भांति, जो तोड़ा नहीं जा सकता। अगर आप हथौड़ी का भी उपयोग करें तो भी आप नहीं तोड़ सकते !

आज समय आ गया है कि सहजयोग को पहचानना (मान्यता देना) आवश्यक है। आपको पहचानना ही पड़ेगा। आपने किसी संत, किसी पैगम्बर, किसी अवतार, किसी को भी नहीं पहचाना। लेकिन आज तो यह शर्त है कि आपको पहचानना पड़ेगा। अगर आपने नहीं पहचाना, तो आपका सहस्रार नहीं खुलेगा, क्योंकि यही समय है जबकि सहस्रार खोला गया, और आपको अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना है। यह एक बहुत ही आवश्यक बात है कि आप सहजयोग को पहचानें। कई लोग ऐसे हैं जो कहते हैं, "मां, सहजयोग में इस तरह क्यों विश्वास करें ? हम बस आपको मां पुकार सकते हैं, आप हमारी मां हो सकती हो।" ठीक है। कोई बात नहीं। लेकिन आप आत्मसाक्षात्कार नहीं प्राप्त कर सकते। और अगर आपने यह प्राप्त कर भी लिया तो आप इसे स्थायी नहीं रख सकते। आपको पहचानना पड़ेगा। पहचानना ही सहजयोग की पूजा है। अगर आप सहजयोग में भगवान को जानना चाहते हैं तो पहचानना ही पूजा है। सहजयोग में अन्य सभी गण, देवता, देवी, शक्ति एक ही हैं। और जो कोई भी सहजयोग को नहीं पहचानता, उन्हें (गण, देवता आदि को) उस व्यक्ति की परवाह नहीं, वह किस प्रकार का मनुष्य है। उदाहरणार्थ, एक आदमी जो शिवजी की पूजा करता है मेरे पास आया। और मैंने देखा कि उसका अनहत पकड़ा हुआ है। यह आश्चर्य की बात है। उसने कहा, "मां मैं शिवजी की पूजा करता हूँ, फिर मेरा अनहत कैसे पकड़ा हुआ है ?" मैंने कहा, "तुम्हें सहजयोग को पहचानना पड़ेगा। शिवजी से पूछो।" और जब उसने शिवजी से प्रश्न पूछा तभी चैतन्य लहरियां (vibrations) आनी शुरू हो गईं। तो सहस्रार पर सहजयोग की पहचान कराने (मान्यता प्रदान कराने) का भार है, यह उसको सिद्ध करता है और विश्वास करवाता है। और अगर सिद्ध करने पर भी आप उसे पहचानते नहीं, तो आप आत्म-साक्षात्कार नहीं प्राप्त कर सकते।

लेकिन जो पहचानते भी हैं, वे आंशिक रूप में पहचानते हैं, वे अनधिकार स्वतन्त्रता लेते हैं। आचरण में यथोचित् आदर भाव, नम्रता व संयम नहीं बरतते, वे हास्यास्पद प्रकार से व्यवहार करते हैं, यह नहीं समझते कि यहां पर यह महापुरुष जो हैं, वह कौन हैं ? मैंने कई बार देखा है कि मैं भाषण दे रही होती हूँ और लोग हाथ ऊपर करके कुण्डलिनी चढ़ा रहे होते हैं या गप्पें मार रहे होते हैं। मुझे आश्चर्य होता है। क्योंकि अगर आपने पहचाना है, तो आपको पता होना चाहिए कि आप किसके सम्मुख खड़े हैं। क्योंकि यह मेरे फायदे के लिए नहीं है। मेरी इसमें कोई हानि नहीं होने वाली। बस यह केवल यह दर्शाता है कि अपनी उत्क्रान्ति में आपने पहचाना नहीं, मान्यता देने में असमर्थ रहे।

और जिस प्रकार कुछ लोग मुझपर एकाधिकार जमाते हैं, वह भी बिलकुल गलत है। मुझ पर एकाधिकार जमाने की कोई आवश्यकता नहीं। कोई भी मुझ पर अधिकार नहीं जमा सकता। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं 'मां गलत समझी'। मुझे कभी भी गलतफहमी नहीं होती, सवाल ही पैदा नहीं होता। या कुछ लोग मुझे सलाह देते हैं, "यह कीजिए, वह कीजिए" यह भी आवश्यक नहीं। अपने आपको इस मर्यादा (protocol) में डालने की कोशिश करो, जो सहजयोग में बहुत ही आवश्यक है, और जिसे आज मैंने पहली बार ही बताया है, कि आप सम्पूर्णतया पहचानने की कोशिश करें। और अगर आप नहीं पहचानते, तो

मुझे खेद है, मैं आपको आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकती जो कि स्थायी रहे। क्षणिक रूप से आप इसे पा सकते हैं किन्तु वह स्थायी नहीं होगा।

तो अपनी उच्च अवस्था को प्राप्त करने का सरलतम मार्ग है, आप शनैः-शनैः (धीरे-धीरे) पहचानें। मान्यता प्रदान करें। यदि किसी में कोई दोष या कमी है तो उसे वह बताना कठिन है, असम्भव है। सहजयोग में आने के बाद मैं यह बता सकती हूं कि यह चक्र पकड़ा है, वह चक्र पकड़ा है। लेकिन, क्योंकि आपको यह ज्ञात है कि उक्त चक्र पकड़ने का क्या अर्थ है। आप फिर आते हैं और कहते हैं, "नहीं, नहीं मां, देखो, ऐसा नहीं है, वैसा नहीं है।" तो मैं आपको क्यों बताऊं कि आपका चक्र खराब है? आपको स्वयं ही अपने आपको स्वच्छ करना है, पूरी ईमानदारी से। लेकिन सर्व-प्रथम आपको पूरी समझदारी और नम्रता से पहचानना है। एक बार आपने पहचान लिया, तो धीरे-धीरे आप वह सब कुछ करेंगे जो करना है, आप जान जाते हैं क्या करना है।

सहस्रार का सार समग्रीकरण (integration) है। सहस्रार में सारे चक्र स्थित हैं। अतः सब देवता/देवी का समग्रीकरण है। और आप उनके समग्रीकरण की अनुभूति कर सकते हो। अर्थात् जब आपकी कुण्डलिनी सहस्रार में पहुँच जाती है तो आपका मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व एक ही हो जाता है। आपका शारीरिक व्यक्तित्व भी इसी में विलय हो जाता है। तब आपको कोई भी समस्या नहीं रहती, जैसे कि "मुझे मां से प्रेम है, किन्तु मुझे खेद है मुझे यह पैसा अवश्य चुराना है। मुझे पता है, मैंने माताजी को पहचाना है, मैं जानता हूं कि वे महान हैं, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता, मुझे झूठ बोलना ही पड़ेगा" या "मुझे यह गलत काम करना ही पड़ेगा क्योंकि अन्य कुछ उपाय नहीं।" मेरे साथ कोई समझौता नहीं हो सकता, आपके व्यक्तित्व का पूर्णतया समग्रीकरण आवश्यक है। अपने धर्मों को ठीक करना पड़ेगा। आप गलत काम करके और कहें कि मैं सहजयोगी हूं यह चल नहीं सकता।

लेकिन इसके लिए सामर्थ्य अन्दर से आती है। आपकी आत्मा आपको बल प्रदान करती है, आप बस अपनी संकल्प शक्ति लगाते हैं कि "हां, मेरी आत्मा कार्य करे" और आप अपनी आत्मा के अनुसार ही कार्य करने लगते हैं। और जहां आप अपनी आत्मा के अनुसार कार्य करने लगते हैं आप देखते हैं कि आप किसी चीज के दास नहीं हैं। आप समर्थ हो जाते हैं, अर्थात् (सम+अर्थ) अपने अर्थ के समतुल्य; सम+अर्थ; समर्थ का अर्थ शक्ति-शाली व्यक्तित्व भी है। तो आपका वह शक्तिशाली व्यक्तित्व बन जाता है जिसे कोई भी प्रलोभन नहीं होता, कोई भी असद्-विचार नहीं होता, कोई पकड़ नहीं होती, कोई समस्या नहीं होती।

स्वार्थी लोग केवल अपने आपको ही नुकसान पहुँचा रहे हैं, सहजयोग को नहीं। सहजयोग तो प्रस्थापित होगा ही। यदि इस नौका में दस आदमी ही हों, तो भी ईश्वर को परवाह नहीं। मां होने की वजह से मुझे ही परवाह करनी पड़ती है। मां होने की वजह से मैं चाहती हूं कि इस नौका में अधिकतम लोग आएं। लेकिन एक बार नौका में सवार होने के बाद बेईमानी के काम करके वापस कूदने की कोशिश न करें।

अतः यह बहुत सरल है कि आप समग्र हो जाएं। समग्रीकरण से आपको वह शक्ति मिलती है जिससे आप जैसा समझते हैं तदनुसार कार्य करते हैं, और जैसा आप समझते हैं उससे आप प्रसन्न रहते हैं। तो आप ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं जहां आप इस 'निरानन्द' को पाते हैं। और यह निरानन्द आपको मिलता है जब आप

पूर्णतया आत्मा स्वरूप बन जाते हैं। निरानन्द अवस्था में कोई भेद-भाव नहीं रह जाता। यह अद्वैत है। 'एक' व्यक्तित्व होता है। अर्थात आप पूर्णतया समग्र हो जाते हैं और आनन्द में कहीं न्यूनता (अपूर्णता) नहीं रहती। वह सम्पूर्ण होता है। इसमें प्रसन्नता या दुःख के पहलू नहीं होते, बल्कि यह बस 'आनन्द' होता है। आनन्द का अर्थ यह नहीं कि आप ठहाका मार कर हंसें या मुस्कराते रहें। यह निस्तब्धता (stillness) आपके अन्तरतम का विश्राम भाव (quietitude), शान्ति (peace) आपके व्यक्तित्व की, आपकी आत्मा की जो चैतन्य लहरियों के रूप में स्फुरित होती हैं, जिनकी आपको अनुभूति होती है। जब आपको उस शान्ति की अनुभूति होती है तब आप अपने को सूर्य के प्रकाश के समान अनुभव करते हैं, उस सौन्दर्य की छटा चारों ओर बिखरती रहती है।

किन्तु पहले हम अपने निजी, स्वार्थी, मूर्ख कल्पनाओं से भयभीत होते हैं। उनको फेंक दो। वे हम पर छायी होती हैं क्योंकि हम असुरक्षित थे और क्योंकि हमारे गलत विचार थे। उन्हें फेंक दो। ईश्वर के साथ एकरूप होकर खड़े रहो। आप पाओगे कि ये सब भय व्यर्थ थे। हमारी शुद्धता बहुत आवश्यक है। यह शुद्धता तब आती है जब आप सहजयोग में बताई विधि के अनुसार आप वास्तव में शुद्धिकरण करें।

मैं कहूँगी सहस्रार दैव ईश्वर) का आशीर्वाद है। यह ऐसे सुन्दर रूप से क्रियान्वित हुआ है। सहस्रार बेधना बहुत कठिन कार्य है। और जब मैंने सचमुच इसे बेधा तो मुझे पता नहीं था कि यह कार्य इतना सफल होगा। पहले मैंने सोचा कि यह उचित समय से पहले हो गया। क्योंकि कई राक्षस अभी भी गलियों में अपना माल बेच रहे हैं और कई ऐसे धर्मान्ध लोग भी हैं जो तथाकथित धर्म के नाम को दुहाई देते हैं किन्तु वास्तव में उनके जो क्रिया-कलाप हैं वे वास्तव में आत्मा के धर्म नहीं हैं। लेकिन धीरे-धीरे हमने अपनी जड़ें जमा ली हैं। अब आओ सहस्रार के मध्य से इस सत्य को अपने अन्दर जड़ें जमाने दो। और जब यह सत्य उस प्रकाश में बदल जाय जो आपका मार्गदर्शन करता है, ऐसा प्रकाश जो आपका पोषण करता है, ऐसा प्रकाश जो आपको प्रदीप्त करता है और आपको एक ऐसा व्यक्तित्व प्रदान करता है जिसमें प्रकाश है, तभी आपको समझना चाहिए कि आपका सहस्रार आपकी आत्मा द्वारा पूर्णतया प्रज्ज्वलित हो गया है। आपका मुखमंडल ऐसा होना चाहिए कि लोग जानें कि यह जो व्यक्तित्व सामने खड़ा है वह प्रकाश है। इसी प्रकार सहस्रार की देखभाल करनी है।

सहस्रार की देखभाल करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि आप सर्दियों में अपना सिर ढकें। सर्दियों में सिर ढकना अच्छा है ताकि मस्तिष्क ठण्ड से ना जमे, क्योंकि मस्तिष्क भी मेधा (fat) का बना होता है। और फिर मस्तिष्क को बहुत ज्यादा गर्मी से भी बचाना चाहिए। अपने मस्तिष्क को ठीक रखने के लिए, आपको हर समय धूप में ही नहीं बैठे रहना चाहिए, जैसा कि कुछ पाश्चात्य लोग करते हैं। उससे आपका मस्तिष्क पिघल जाता है और आप एक सनकी मनुष्य बन जाते हैं, जो इस बात का संकेत है कि आपके कुछ समय बाद पागल होने की सम्भावना है। अगर आप धूप में भी बैठें तो अपना सिर ढके रखें। सिर ढकना बहुत आवश्यक है। लेकिन सिर को कभी कभी ढकना चाहिए, हमेशा नहीं। क्योंकि अगर आप हमेशा ही सिर पर एक भारी पट्टा बांधे रहें तो रक्त का संचार ठीक प्रकार से नहीं होगा और आपके रक्त संचार में तकलीफ होगी। अतः केवल कभी कभी (हमेशा नहीं) सिर को सूर्य अथवा चन्द्रमा के प्रकाश में खुला रखना उचित है। नहीं तो आप चांद के प्रकाश में अत्यधिक बैठे तो पागलखाने

पहुँच जाएंगे। मैं जो कुछ भी बताती हूँ, आपको समझनाचाहिए कि सहजयोग में किसी भी चीज में 'अति' ना करें। यहां तक कि पानी में भी लोग तीन-तीन घंटे तक बैठे रहते हैं। मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। सिर्फ दस मिनट के लिए आपको पानी में बैठना है, किन्तु वह पूरे हृदय से। अगर मैं उनसे कुछ करने को कहती हूँ तो वे वह चार घंटे तक करते रहेंगे। इसकी कोई आवश्यकता नहीं। केवल दस मिनट के लिए कीजिए।

अपने शरीर को भिन्न-भिन्न प्रकार के अनुभव, उपचार (treatment) दीजिए, हमेशा एक ही व्यवस्था नहीं। इस तरह तो आपका शरीर नीरस (bored) हो जाएगा या बोझल (over-burdened) अनुभव करेगा। अगर आप किसी को बताएं कि आपके लिए यह मन्त्र है तो इसे तभी तक प्रयोग करना चाहिए जब तक कि आप इस चक्र की बाधा से छुटकारा न पा लें। उसके पश्चात् नहीं। मान लीजिए इस जगह एक पेंच लगाना है। तो आप इसको तभी तक घुमाएंगे जब तक कि यह मजबूती से न गड़ जाए। आप इसको गड़ने के बाद भी घुमाते नहीं जाते। क्या आप इसको लगातार घुमाते ही चले जाएंगे ताकि सारी चीज बिगड़ जाए? अच्छा है कि आप सद्बुद्धि, विवेक का प्रयोग करें। और इस सद्बुद्धि के लिए आपको श्री गणेश या ईसामसीह को जानना चाहिए।

ईसामसीह, जो सिर के दोनों तरफ हैं, यहां (पीछे) महागणेश हैं और यहां (सामने माथा) ईसामसीह हैं। दोनों आपकी दृष्टि ठीक करने में आपकी सहायता करते हैं और आपको समझदारी व सद्बुद्धि प्रदान करते हैं। तो सद्बुद्धि किसी चीज से चिपकने में नहीं है। सहजयोगी चिपकने वाले लोग नहीं हैं। अगर वे चिपक जाते हैं तो समझ लो वे उन्नति नहीं कर रहे हैं। आपको विचारों (ideas) से नहीं चिपकना चाहिये और न व्यक्तियों से चिपकना चाहिये। आपको हमेशा गतिमान रहना चाहिये, इसका यह मतलब नहीं कि इस गतिशीलता में आप कहीं गिर जाएं और सोचें "अरे, हम तो बहुत उन्नति कर रहे हैं क्योंकि हम गिर रहे हैं।" आपको ऊंचा उठना है, गिरना नहीं है।

तो जब आप सहजयोग में कुछ प्राप्ति कर रहे हैं तो आपको सर्वप्रथम देखना चाहिए कि आपका स्वास्थ्य ठीक रहे, आपका मस्तिष्क सुचारु (normal) रहे, आप एक सामान्य (normal) व्यक्ति हों। अगर आप अभी भी लोगों पर भौंकते हैं (अप्रिय बोलते हैं) तो आपको यह जान लेना चाहिए कि आपमें कुछ दोष है। या आप मन में उदास, उद्विग्न और अकारण कुपित होते या आपकी मनःस्थिति बिगड़ती है तो आप समझ लें कि आप अभी सहजयोगी नहीं हैं। आप अपने आप की जांच कर सकते हैं। अगर आप एक पक्षी की तरह स्वच्छन्द (free) हैं तो ठीक है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि आप सड़क पर चिड़िया की तरह गाते फिरें या पेड़ों पर फुदकते फिरें। एक मूढ़ आदमी के सामने मैं कोई भी उपमा दूं वह अत्यन्त मूर्खता पूर्ण आचरण करेगा। लेकिन वही एक सद्बुद्धिमान के सामने देने से वह उसका सही उपयोग करेगा। तो यह समझना चाहिए कि सहज-योग विवेकी मनुष्यों द्वारा विवेक पूर्वक जाना जाता है।

सहजयोग में होता क्या कि है आप एक चीज को दृढ़ता पूर्वक पकड़ लेते हैं। वह चीज है आपकी आत्मा और आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक पतंग की तरह विचरण करता है, जैसे एक पतंग हरेक चीज के ऊपर उड़ती फिरती है। आप एक ही चीज से चिपके रहते हैं, वह है आपकी आत्मा। अगर आप सचमुच ऐसा कर सकें, यथार्थ में और

ईमानदारी से, पैसा, परिवार और अन्य सांसारिक वस्तुओं के बारे में अधिक चिन्ता किए बिना, तो आप सहजयोग में सफल हैं। इनके बारे मे बस चिन्ता न करें, आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। बस बन्धन दीजिए। अगर ऐसा नहीं हो पाता तो आपका सहजयोग समाप्त। अगर हो जाता है तो बहुत अच्छा। आपकी व्यक्तिगत इच्छा का महत्व नहीं, प्रभु की इच्छा का महत्व है—प्रभु आपकी जैसी इच्छा हो वही हो (Thy will be done) आप कहें प्रभु आपकी जैसी इच्छा हो। और कैसा आश्चर्य है कि आपकी इच्छाएं बदल जाती हैं, आपके संकल्प बदल जाते हैं और जो कुछ भी आप कहते हैं वही हो जाता है। लेकिन जब ऐसा हो जाता है तो लोगों में अहंकार उत्पन्न हो जाता है। अतः सतर्क रहें। यह सब 'शक्ति' द्वारा किया जाता है, आपके द्वारा नहीं। आपकी 'आत्मा' द्वारा, आप द्वारा नहीं। आपको आत्मा होना है। और जब आप आत्मा हो ही जाते हैं तो आप अकर्म में होते हैं, जहां आप जानते नहीं कि आप कर रहे हैं, बस हो जाता है, आप अनुभव नहीं करते, आप अवगत नहीं होते।

इन सब भाषणों के बाद, आप के ज्यादातर चक्र खुल गए होंगे। लेकिन यह सब 'मेरा' कार्य है। अब आपको भी कुछ घर जाकर काम (home work) करना है। आपको भी अभ्यास करना है और अपने आपको देखना है। सावधान रहो। अपने आपको दर्पण में देखने और अपना सामना करने की कोशिश करो। आप देखें आप कितने ईमानदार रहे हैं, आप कितने शुद्ध रहे हैं, सामूहिकता में आप कितने मित्रता पूर्ण हैं, जो सहजयोग में बहुत महत्व रखता है। अगर आप सामूहिक नहीं हैं, अगर आप निराले या हास्यास्पद हैं, अगर आप दूसरों से विचार संचार नहीं (communicate) कर सकते, तो समझ लें कि कुछ गड़बड़ है। और तब आप अपने आपका सामना करें (अपने को जांचें) और अपने आपको ठीक करने की कोशिश करें। जैसे एक साड़ी को उतार कर साफ किया जाता है। आप अपने को अपने 'स्व' से अलग करके साफ करें। इसी प्रकार सहजयोगी प्रगति करेंगे। जब कुछ सहजयोगी ऊंचे उठेंगे तो और अनेक उनसे प्रभावित होंगे और ऊंचे उठेंगे। इस प्रकार सब सहजयोगी समुदाय बहुत तीव्रता से ऊंचे उठ सकता है। लेकिन तुम लोग जो ऊंचे उठ रहे हो, और ज्यादा उन्नति करो, बिना अपनी उन्नति के बारे में सोचते हुए। यह बहुत आवश्यक है।

जो लोग सोचते हैं कि दूसरे लोग उनसे ऊंचे हैं वे भी गलत सोचते हैं, क्योंकि ऐसी बात नहीं है। समस्त ही ऊंचा उठ रहा है। कोई इस प्रकार अपने को निम्न न समझे या अपमानित अनुभव न करे, कि कोई उन्हें निम्न समझता है। औरों को सोचने दो, उससे क्या होता है, भगवान तो ऐसा नहीं सोचता। तो ये छोटी-छोटी बातों से आप सतर्क रहें। इस कृतयुग में आत्मसाक्षात्कार का चरम लक्ष्य प्राप्त करना बहुत ही आसान है।

मैं सोचती हूं कि मैंने सहस्रार के बारे में बहुत कुछ बताया है। अगर आपकी कोई समस्या है तो आप अभी पूछ लें। लेकिन सिर्फ सहस्रार के बारे में, और किसी के बारे में नहीं। अच्छा होगा कि आप मेरे से अन्य विषय के बजाय सिर्फ सहस्रार के बारे में ही प्रश्न पूछें।

卐 जय श्री माता जी 卐

महामानव (The Superman)

सहजयोग हो सहजमार्ग, और न कोई आन ।
चल कर इस पथ पर, बन तू मानव महान ॥१॥

बाहर से स्थिर तू, भीतर से गतिमान ।
यात्रा यह जीवन अनन्त की, हे मानव महान ! ॥२॥

आगे बढ़ना सहज में, कर दूर अज्ञान ।
होगा अमर जीवन तेरा, हे मानव महान ! ॥३॥

चल अब निरन्तर, असत् से सत् की ओर ।
तम से ज्योति, मृत से अमृत, कोई न जिसकी छोर ॥४॥

तज दिया जग सारा, छोड़ दिये घर बार ।
साथ तेरे चलने को, हो गये हम भी तैयार ॥५॥

होकर गृहस्थ ही, तय कर यह पंथ ।
पढ़ना-सीखना सहज ही, सहज हो तेरा ग्रन्थ ॥६॥

"प्रभु का अन्तिम निर्णय" ही, हे मानव महान ! ।
असीम क्षमता तेरी, दे बदल यह जहान ॥७॥

आनन्द ही आनन्द धरा पर, होगा जीवन अनन्त ।
भय-शोक दुःख-दर्द का, आया अब अन्त ॥८॥

मातृ पदकमलों पर निरन्तर, रहते जिनके ध्यान ।
मृदुभाषिता, विनम्रता के, हैं जो मूर्तिमान ॥९॥

सहज सद्गुण सम्पन्न, सुहृद हे क्षमावान ! ।
धन्य-धन्य हो तुम, हे मानव महान ! ॥१०॥

तन मन भाव शुद्ध, मृदु वचन मुक्त विचार ।
नित्य पवित्र चिन्तन, सतुलित तेरा व्यवहार ॥११॥

माँ के प्रिय बालक हो, हो तुम प्रान समान ।
बदलेगा तू इतिहास, हे मानव महान ! ॥१२॥

कहाँ गया अहं तेरा, गये कहाँ षट् विकार ।
हुआ विशुद्ध मन, पाया आत्म साक्षात्कार ॥१३॥

सहज जीवन के आधार, मानवता के हो प्रान ।
विनम्र-प्रणिपात चरणों पर तेरे, हे मानव महान ! ॥१४॥

मातृप्रेम से आलोकित पथ तेरा, पाया आत्म ज्ञान ।
करो मार्ग दर्शन मानवता का, हे मानव महान ! ॥१५॥

With best compliments from :

S. K. GUPTA

A.B. CORPORATION

1-C/27, Rohtak Road
New Delhi-110005
Phones : 5719379, 5725601

(द्वितीय कवर का शेषांश)

बहना आरम्भ कर देता है। आप इस पर विचार कीजिए। आपको महती प्रसन्नता एवं आह्लाद का अनुभव होगा। यह सरलता वामांग विशुद्धि में आकर कटु एवं कठिन कष्टदायक बन जाती है सो आप सब अपनी वामांग विशुद्धि पर नियंत्रण कर मृदुल वाणी द्वारा मंजुल शब्दों का प्रयोग करें। आपकी भाषा प्रत्येक व्यक्ति के लिए मृदु होनी अनिवार्य है। विशेषतया पुरुष वर्ग को अपनी सह-धर्मिणियों से मृदुल संभाषण (मीठी-बातें) करनी चाहिए। अब यह मृदुलता आपकी वामांग विशुद्धियों को शुद्ध कर देगी। आप सदैव मृदुल वाणी का ही प्रयोग करें। मृदुल प्रक्रिया से संबोधन ही अपनी अपराध भावना को सुधारने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है क्योंकि यदि आप किसी को भी कटुवचन कहते हैं तो आप अपनी चिर-अभ्यस्तता के अनुसार ही ऐसा करते हैं तथा ऐसा करने में आपको प्रसन्नता का अनुभव भी होता है। जैसे ही आप अपने कथोप-कथन की समाप्ति करते हैं तो आपको पश्चात्ताप भी होता है और आप कहते हैं कि—"हे भगवान मैं क्या कह गया।" यही सबसे बड़ा अपराध है। अतः सदैव प्रत्येक व्यक्ति को सुन्दर मीठे-मीठे शब्द चुनकर प्रयोग करने का प्रयास करना चाहिये। देखिए चिड़ियों का कलरव (चहचहाना) हो रहा है। इसी प्रकार आपको भी सब प्रकार की ध्वनियाँ सीखनी चाहिएं जिससे आप अपनी मृदुल मंजुल वाणी से सबको प्रसन्न कर सकें। यह अति महत्वपूर्ण वस्तु है। नहीं तो आपकी वामांग विशुद्धि अत्यधिक बढ़ जायेगी और आप वार्तालाप का अलग मार्ग (ढंग) विकसित कर लेंगे जिसके फलस्वरूप आपके ओष्ट (अधर) वाम विशुद्धि की ओर जाकर विकृत हो जायेंगे।

जब यह स्राव उच्चस्थ आज्ञा चक्र में पहुँचता है जहाँ श्री गणेश शक्ति सर्वोत्कृष्ट क्षमाशक्ति बन जाती है तब यह फिर और ऊँचे उठकर अवयवी क्षेत्र (Limbic area) में पहुँचती है जहाँ श्रीगणेश शक्ति, जो सूर्य से परे है, विराजती है। तब विशिष्ट अहं (Superego) ऊपर उभरती है। यह शक्ति चंद्रमा की शक्ति है। यहाँ चंद्रमा की आत्मा है। यही आत्मा (Spirit) बन जाती है। यह सदा शिव के सिर पर विराजमान होती है। यह एक ही बात है। श्री गणेश की शक्ति की सम्पूर्ण उत्क्रान्ति, जैसा कि आप देखते हैं, अति सुन्दर है। इस प्रकार से हमारी इच्छा ही आत्मा (Spirit) बन जाती है। आपकी इच्छा और आत्मा का समन्वय (एकीकरण) हो जाता है परन्तु कभी-२ यह बाधा बहुत ही निकृष्ट बन जाती है। तुमने देखा है कि तुम सबके सब जिनकी वाम विशुद्धि है जब कठोर वचन बोलते हैं तो आपको ज्ञान होना चाहिए कि यह आप नहीं बोल रहे हैं। वस्तुतः नहीं, क्योंकि आप आत्मा हैं और आत्मा कठोर वचन उच्चारण नहीं कर सकती और न ही भ्रष्ट कर सकती है। यह कठोर शब्द तभी प्रयोग करेगी जब इसकी अत्यन्त आवश्यकता होगी, परन्तु चिन्मात्र पुनर्निमित सी आप इस पर विशेष ध्यान दें। यह कार्य किसी अन्य शक्ति द्वारा सम्पन्न होना है।

श्री माताजी
राहुरी, दिनांक ३१-१२-८०

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

★ निर्मल वाणी ★

जिस समय आपके मन में परमात्मा के प्रति प्रेम, आदर व आदरयुक्त भय (awe) रहता है तब ये विश्वास हो जाता है कि परमात्मा ही सर्वशक्तिमान है और वही हमारा पालन कर रहा है। वह अपनी शक्ति से हम पर आशीर्वाद की वर्षा कर रहे हैं। परमात्मा अत्यन्त करुणामय है। वे कितने करुणामय हैं इसकी आप कल्पना नहीं कर सकते। परन्तु वे जितने करुणामय हैं उतने ही कठोर हैं। अगर उनका कोप हो गया तो बचना महा मुश्किल है। उन्हें कोई नहीं रोक सकता, मेरा प्यार भी नहीं रोक सकता। क्योंकि वे कहेंगे आपने बच्चों को बहुत छूट दे रखी है। इसलिए वे खराब हो गये। इसलिए मैं कहती हूँ कि कोई भी बुरा कृत्य मत कीजिए और अपनी माँ का नाम बदनाम न कीजिए। मैं आपको फिर से कहती हूँ अपना समय व्यर्थ की बातों में मत गँवाइए और पूरी तरह से सहजयोग अपनाइए।

❋ ❋ ❋

श्री क्राइस्ट के पास एकादश रुद्र की शक्तियां हैं, माने ग्यारह संहार शक्तियां। इन शक्तियों के स्थान अपने माथे के चारों ओर हैं। जिस समय श्री कल्की शक्ति का अवतरण होता है उस समय ये सभी शक्तियाँ संहार का काम करती हैं।

❋ ❋ ❋

सहजयोग में आने के बाद आपको समर्पित होना जरूरी है, क्योंकि सब मिलने के बाद उसमें टिकना, जमना और उसमें स्थिर होना बहुत महत्वपूर्ण है। बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं "हम स्थिर कब होंगे ?" इसका उत्तर है समझ लीजिए आप किसी नाव में बैठकर जा रहे हैं। नाव का स्थिर होना आपकी समझ में आता है। आप अगर दो पहिये वाली साईकल चला रहे हैं वह चलाते समय जब आप डावांडोल नहीं होते और स्थिर हो जाते हैं ये जैसे आप समझते हैं उसी तरह सहजयोग में आपका स्थिर होना आप समझें।

❋ ❋ ❋

मैं आपके लिए रात-दिन मेहनत करती हूँ। परमेश्वर प्राप्ति के लिए जो आखिरी परीक्षा है वह उत्तीर्ण होने के लिए मैं आप पर मेहनत करूंगी। लेकिन इसमें आप का भी मुझे पूरी तरह सहकार्य होना चाहिए। ये सभी प्राप्त करने के लिए सर्वतोपरी यत्न करने चाहिए और जीवन का ज्यादा से ज्यादा समय सहजयोग में लगाना चाहिए। सहजयोग महान है, बहुत ही कीमती है, वह आत्मसात करने के लिए अपना समय उसमें लगाना है।

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 8.00, Annual Subscription Rs. 40.00 ; Foreign [By Airmail £ 12 $ 16]